मार्च 2025 | अंक-13

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

विशेषांक :
वन्दनीया माता
भगवती देवी शर्मा जी
एवं अखण्ड दीप
शताब्दी समारोह

एक दिव्य अन्तर्नाद.....

अनाहत

Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Gayatrikunj-Shantikunj
Recognized by **UGC** | Accredited by **NAAC** | Certified by **ISO 9001:2015**

संस्थापक एवं सूक्ष्म संरक्षक

(अखिल विश्व गायत्री परिवार)

- **परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य**
- **परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा**

संरक्षक एवं प्रमुख

- **श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या**
  प्रमुख : अखिल विश्व गायत्री परिवार, कुलाधिपति : देसंविवि
- **श्रद्धेया शैलबाला पण्ड्या (जीजी)**
  प्रमुख : अखिल विश्व गायत्री परिवार, संरक्षिका : देसंविवि

मार्गदर्शक मण्डल

- **श्री शरद पारधी**
  मान. कुलपति : देव संस्कृति विश्वविद्यालय
- **डॉ. चिन्मय पण्ड्या**
  मान. प्रति कुलपति : देव संस्कृति विश्वविद्यालय
- **श्री बलदाऊ देवांगन**
  मान. कुलसचिव : देव संस्कृति विश्वविद्यालय

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

Dev Sanskriti Vishwavidyalaya,
Gayatrikunj-Shantikunj
Recognized by **UGC**,
Accredited by **NAAC**
Certified by **ISO 9001:2015**

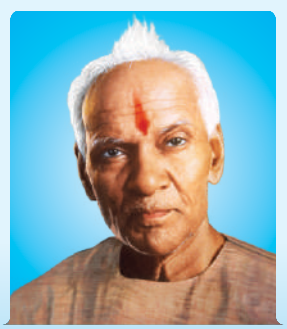

कुलपिता
पं.श्रीराम शर्मा आचार्य
(1911-1990)

कुलमाता
माता भगवती देवी शर्मा
(1926-1994)

संरक्षक
डॉ.प्रणव पण्ड्या
कुलाधिपति

संरक्षिका
शैलबाला पण्ड्या
प्रमुख गायत्री परिवार

अनुक्रमणिका

मार्च 2025 | अंक- 13

एक दिव्य अन्तर्नाद.....

अनाहत

सम्पादक की कलम से...

गुरुदेव-माताजी के विचार सुक्त 04

शताब्दी समारोह

1 शताब्दी समारोह (वन्द.माता भगवती देवी शर्मा जी एवं अखण्ड दीप) 06

2 कार्यक्रम का स्वरूप 07

12 माह - 12 कार्यक्रम

1 संत समागम एवं सम्मान समारोह 09

2 भारत रत्न, पद्म सम्मान, प्रतिभा सम्मान समारोह 10

3 वैश्विक प्रतिभा सम्मान समारोह लेखक (भाषा और संस्कृति वर्ग) 11

4 वैश्विक प्रतिभा सम्मान समारोह लेखक (सिनेमा, रंगमंच और खेल) 12

5 समाज सेवी सम्मान समारोह 13

6 वैश्विक उत्कृष्ट जन सेवक समागम-सम्मान 14

7 बुद्धिजीवी सम्मान समारोह (डॉक्टर/इंजीनीयर/वकील/प्रोफेसर/जज आदि) 15

8 लोककला/संस्कृति/कलाकार सम्मान 16

9 नारी शक्ति प्रतिभा सम्मान समारोह (खेल, सिनेमा और रंगमंच) 17

10 युग निर्माण- विभूति सम्मान समारोह 18

11 युग निर्माण- साधक सम्मान समारोह 19

12 प्रवासी भारतीय सम्मान समारोह 20

शिक्षण प्रशिक्षण/शिविर

1 चेतना जागरण शिविर 21

2 समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन शिविर 22

3 नौ दिवसीय संजीवनी साधना शिविर 23

4 आत्मवत् सर्वभूतेषु साधना शिविर (आत्म जागृति शिविर) 24

5 वेद, उपनिषद्, संहिता परिचय शिविर 25

6 भारतीय ज्ञान-परम्परा परिचय शिविर 26

7 Life Management Training Program 27

ज्ञान, कर्म और भक्ति

1 लोकमंगल की साधना 28

2 आत्मपरिशोधन 29

3 तपस्या 30

4 तप बिना मुक्ति नहीं 31

5 अपने स्वरूप का ज्ञान 32

6 आत्मोद्धार का महान संकल्प 33

7 तत्परता- तन्मयता 34

8 समर्थता का सदुपयोग 35

9 विचारों की शक्ति 36

10 जीवन की वास्तविक धरोहर : विद्या 37

11 कौन होते हैं विद्या के अधिकारी 38

12 मनुष्य की वास्तविक कठिनाई- बहिर्मुखता 39

13 साहस ही हमें विजयी बनाता है 40

14 सुख और कठिनाइयाँ- दोनों की उपयोगिता 41

15 सर्वश्रेष्ठ कलाकारिता 42

16 स्वाभाविक धर्म 43

17 उपासना का प्रमुख आधार- श्रद्धा 44

18 भाव संवेदना 45

19 जागरूकता का पुण्य-पथ 46

20 दुःख से मुक्ति का एकमात्र उपाय 47

21 देवता का अर्थ है देने वाला 48

22 यज्ञ की प्रेरणा 49

23 मानवीय प्रतिभा का सुनियोजन 50

24 हम अपनी पात्रता बढ़ाएँ 51

25 समृद्धि के साथ सदाशयता का बढ़ना 52

26 जीवात्मा का ध्येय है- अनन्त आनन्द 53

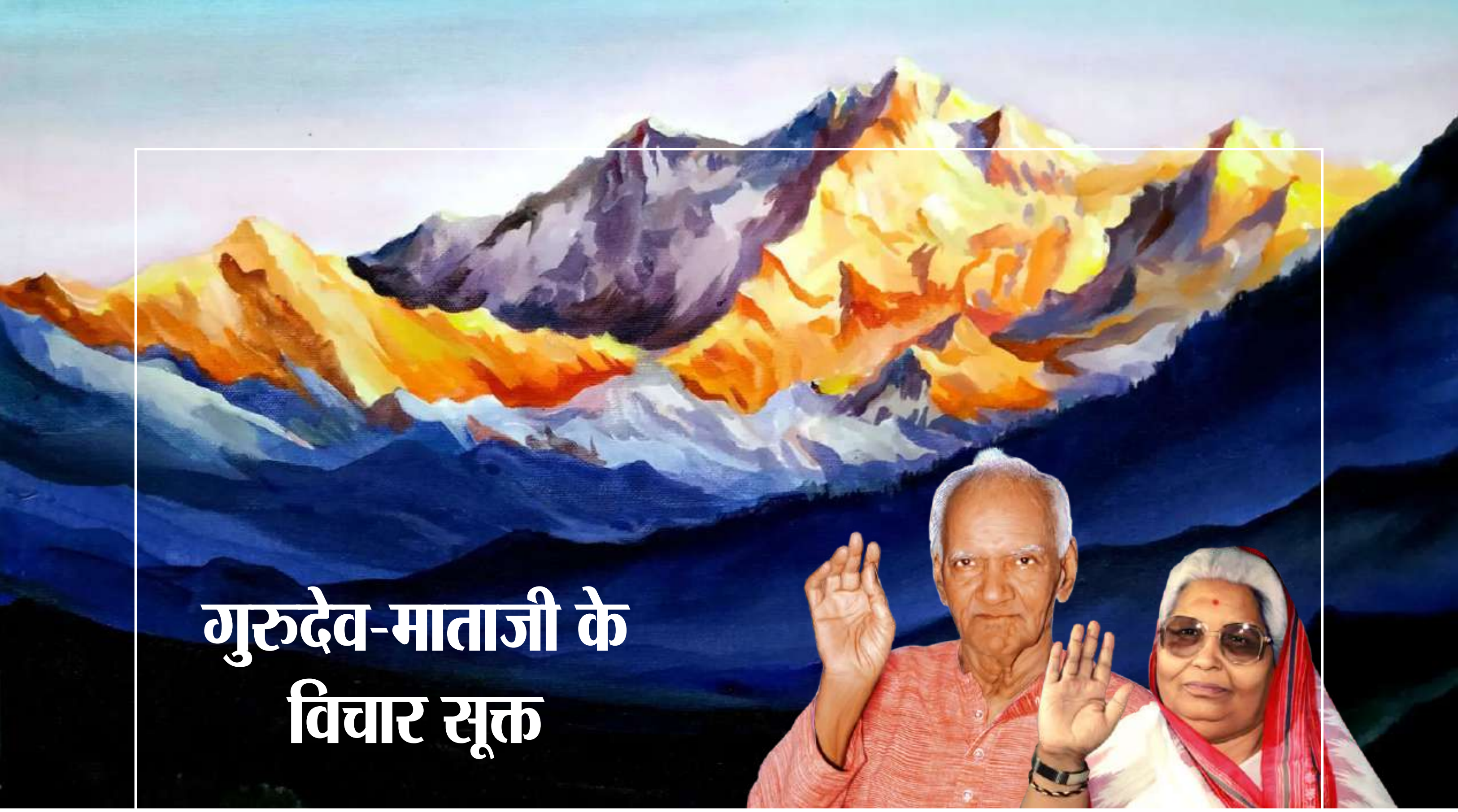

गुरुदेव-माताजी के विचार सूक्त

सम्पादक की कलम से...

वर्ष 2026 परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी का जन्म शताब्दी वर्ष है। साथ हीं परम पूज्य गुरुदेव द्वारा वर्ष 1926 से प्रज्वलित अखण्ड दीपक का भी शताब्दी वर्ष है।

''शक्ति स्वरुपा परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा'' जैसे शिव और शक्ति अभिन्न हैं, सीता-राम, राधे-श्याम अभिन्न हैं, वैसे ही स्नेह सलिला शक्तिस्वरुपा माता भगवती देवी शर्मा, युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव की अभिन्न सत्ता ही हैं। लौकिक रिश्ते में तो वे पूज्य गुरुदेव की सहधर्मिणी थीं, लेकिन गायत्री परिवार के करोड़ों शिष्य-साधकों की तरह स्वयं परम पूज्य गुरुदेव भी उन्हें माताजी ही कहा करते थे। स्वयं उन्हीं के शब्दों में- ''माताजी ने प्रायः आधी शताब्दी हमारी ऐसी ही सेवा की, जैसे काया- छाया का अभिन्न सम्बन्ध कहा जाता है। उनकी काया में है तो, हाड़-माँस ही, पर उसका कोई कण ऐसा नहीं है, जिसमें श्रद्धा कूट-कूट कर न भरी हो। ऐसा कोई नहीं जो उनके सम्पर्क में आया और निष्ठावान न हुआ हो।''

परम वन्दनीया माताजी पूज्य गुरुदेव की ही अभिन्नसत्ता थी। जिन्हें उनके कुछ क्षण का ही सानिध्य क्यों न मिला हो, वह माताजी के प्यार-दुलार से भावविभोर हो गया। वन्दनीया माताजी ने आजीवन प्यार-दुलार लुटाया, करोड़ों लोगों समाज में, उपेक्षित नारी में नया आत्मविश्वास जगाया, उन्हें सम्मान दिलाया। इसके अलावा जब-जब भी आवश्यकता पड़ी, सम्पूर्ण मिशन के सूत्र संचालन से लेकर मासिक अखण्ड ज्योति पत्रिका के सम्पादन तक का कार्य बड़ी कुशलता से सम्भाला।

परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद उन्होंने गायत्री परिवार को जो गति प्रदान की, उसमें उनके विराट शक्ति स्वरुपा की झाँकी स्पष्ट दिखाई देती थी। उन्हीं के संरक्षण-मार्गदर्शन में अनेक प्रतिकूलताओं के बावजूद हरिद्वार में कुम्भ स्तर का विराट आयोजन हुआ। उन्हीं के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन और सूक्ष्म संरक्षण में देश-विदेशों में

अश्वमेधों की श्रृंखला चली, जिनमें एक-एक आयोजन में कई-कई लाख लोगों ने भाग लिया। वे 16 अश्वमेध महायज्ञों में स्वयं उपस्थित रहीं।

अनन्य आत्मीयता अथाह मातृत्व और अपने स्नेह की अविरल वर्षा कर करोड़ों लोगों का विराट, देव परिवार बनाने वाली माताजी एवं जिस अखण्ड दीपक की प्रकाश ऊष्मा के सानिध्य में परम पूज्य गुरुदेव द्वारा 24-24 लाख के 24 महापुरश्चरण सम्पन्न किये गये, के जन्मशताब्दी वर्ष को लक्ष्य कर अखिल विश्व गायत्री परिवार पूरे देश और दुनिया को उसी पारिवारिक प्रेम के सूत्र में पिरोनें का देव परिवारों के निर्माण का अभियान चला रहा है। समाज में सद्भाव, शान्ति, संतोष का वातावरण निर्मित हो, परस्पर सामंजस्य, स्नेह, सकारात्मक सोच बढ़े ऐसे प्रयास किये जा रहे हैं। इस अवसर पर पूरे देश-विदेश में प्रत्येक जिला, प्रखण्ड तथा पंचायत एवं ग्राम स्तर तक अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा ''ज्योति कलश यात्राएँ'' भी निकाली जा रही है।

वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी के प्रयाज वर्ष में परम पूज्य गुरुदेव-माताजी के विचार सूक्त प्रस्तुत कर रहें हैं, जो हम सब के जीवन को उच्चस्तरीय दिशा देने में सहायक है। यदि गुरुदेव-माताजी के विचार सूक्त आपके साथ हों तो आप वही करेंगे जो आपकी दिव्यता की पुकार होगी। उसे ही चरितार्थ करने आप इस धरती पर आए हैं तथा आपका जीवन सफल तभी माना जाएगा जब उसे पूर्ण रूप से जाग्रत होने का अवसर मिल सके। इसके लिए कहीं बाहर नहीं अपने ही भीतर देखना होता है। यहीं इन लेखों का उद्देश्य है। मानवमात्र के कल्याणकारी इस महान अनुष्ठान में सभी का भाव भरा स्वागत है।

शताब्दी समारोह कार्यक्रम

चेतना अवतरण वर्ष
विश्वस्तरीय 5 विस्तृत कार्यक्रम

1 अमेरिका-उत्तरी और दक्षिण अमेरिका
2 सम्पूर्ण यूरोप
3 अफ्रीका सम्पूर्ण एक साथ
4 मध्य एशिया, मारीशस
5 ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, साऊथ ईस्ट एशिया

भारत में पाँच बड़े स्थानों पर क्रमश:

1 जनवरी (वसंत पंचमी) - गुजरात, राजस्थान
2 अप्रैल (नवरात्रि) - मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़
3 जून (गायत्री जयंती) - उत्तर प्रदेश एवं बिहार
4 अगस्त (गुरु पूर्णिमा)- नार्थ ईस्ट, उड़ीसा, उत्तर भारत
5 अक्टूबर (अश्विन नवरात्रि) - दक्षिण भारत

केन्द्रीय निर्देशन
माननीय प्रतिकुलपति जी

1 क्षेत्रवार टोली निर्धारण
2 टोली प्रशिक्षण
3 सामान वितरण, सामग्री को भिजवाने की व्यवस्था
4 जोन के माध्यम से लक्ष्य (TARGET) निर्धारण

वन्द.माता भगवती देवी शर्मा जी एवं अखण्ड दीप

कार्यक्रम का स्वरूप 2026

ज्ञान कुंभ - वाजपेय यज्ञ

भाग- 1

दिन- 3-4

- क्षेत्रवार प्रतिभाओं द्वारा ज्ञान मंथन
- प्रतिभा सुनियोजन युग निर्माण हेतु
- आशावादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन
- Seminar/Conference के द्वारा क्षेत्रवार प्रतिभा का Database
- मिशन के विभिन्न स्वरूप जैसे पूज्यवर का समग्र दर्शन, अखण्ड दीपक प्रेरणा एवं प्रयोजन, वंदनीया माताजी समग्र जीवन दर्शन जैसे विषयों पर क्षेत्रवार SYMPOSIUM/SEMINAR/WORKSHOPS का बौद्धिक वर्ग में प्रतिपादन।
  - इसमें विश्वविद्यालय के स्टाफ का क्रमबद्ध सुनियोजन।
  - 5 क्षेत्र - पाँच पाँच टोली (8-10 सदस्य)
- मिशन के DIGITAL CONTENT/VICHAR KRANTI की क्षणिकाएँ।
- पूर्व में तैयार किये गये कुछ नये (मा.प्रतिकुलपति जी) PODCAST का DIGITAL प्रस्तुतीकरण।

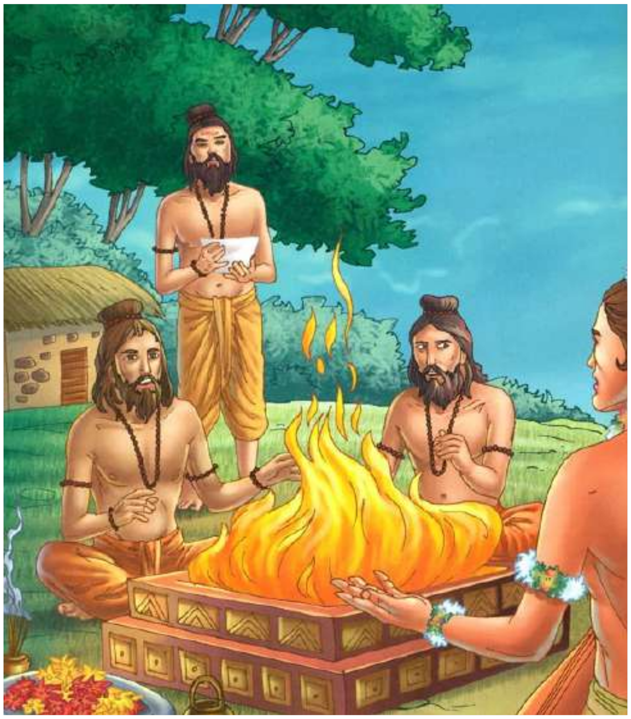

- 21 वीं सदी-उज्जवल भविष्य में युवाओं की भूमिका-ज्ञान सत्र
- 21 वीं सदी-नारी सदी- आदरणीया शैफाली जीजी के मार्गदर्शन में ज्ञान मंथन

आस्था संवर्धन 501/ सहस्र कुण्डीय यज्ञ

भाग- 2

दिन- 3-4

- क्षेत्रवार जिम्मेदारीयों का आवंटन
- संयुक्त कार्यक्रम समितियों का निर्धारण
- केन्द्रीय नेतृत्व में क्षेत्रीय प्रतिभाओं का सुनियोजन
- शान्तिकुञ्ज यज्ञ टोली निर्धारण-प्रशिक्षण
- क्षेत्रीय टोलीयों द्वारा प्रचार-प्रसार एवं प्रयाज व्यवस्था
- यज्ञ प्रसाद में पूज्यवर के साहित्य का निर्धारण
- प्रिंटिग तैयारी एवं उचित साहित्य पूरती
- प्रदर्शनी की तैयारी
- यज्ञ हेतु उचित संसाधन; मंच तैयारी एवं प्रतिभागिता हेतु संकल्प
- केन्द्रीय दीक्षा एवं अन्य संस्कार
- साधनात्मक मार्गदर्शन एवं भेंट वार्ता (आदरणीय प्रतिकुलपति जी/आ. शैफाली जीजी/परम श्रद्धेया जीजी जी द्वारा)
- शान्तिकुञ्ज कार्यकर्ता प्रशिक्षण एवं जोन रूप में प्रतिभा का क्षेत्रीय सुनियोज
- सन् 2026 से आगे (आदरणीय प्रतिकुलपति जी भावी कार्यक्रमों एवं आशा संचार हेतु नये संकल्प एवं घोषणा)
- सन् 2040 अखण्ड ज्योति पत्रिका शताब्दी वर्ष

क्षेत्रीय एवं केन्द्रीय सेवा नियोजन

भाग- 3

दिन-

- केन्द्र की आवश्यकता अनुसार नये प्रकल्पों एवं विभागों का निर्धारण
- उपयोगी एवं अनुपयोगी कार्यकर्ताओं का विभाजन
- अनुपयोगी कार्यकताओं का प्रशिक्षण देकर समानियोजन
- क्षेत्रीय प्रतिभाओं का विषयवार चयन एवं क्षेत्रीय संगठन में उपयुक्त निर्धारण
- जोन-उपजोन-जिला समन्वयक की भूमिका निर्धारण। आवश्यकतानुसार परिवर्तन
- क्षेत्रवार साधना प्रशिक्षण केन्द्रों का निर्धारण (केन्द्रीय नेतृत्व में)
- साधन सम्पन्न परिजनों का विशेष शिविर एवं संकल्प संगोष्ठी
- सम्पूर्ण भारत के शक्तिपीठों का निरीक्षण एवं केन्द्रीय व्यवस्था में पुर्नगठन
- साधना संपुट एवं कौशल विकास का सतत प्रशिक्षण (इस हेतु शान्तिकुञ्ज टोली/ विश्वविद्यालय सदस्यों का चयन एवं उनका विधीवत प्रशिक्षण)
- शान्तिकुञ्ज विभागों/कार्यकर्ता कार्यशैली का अवलोकन/निरीक्षण/उचित परिवर्तन एवं प्रशिक्षण व्यवस्था
- सेवा विषय का उचित DATABASE
- डॉक्टर/इंजीनियर/वकील/प्रोफेसर/अन्य उपाधीयों से विभूषित सदस्यों का पूर्ण ब्यौरा (प्रतिकुलपति जी) को उपलब्ध कराना। उनके द्वारा निर्धारित टीम द्वारा उन सदस्यों से बातचीत एवं पूर्व मानसिक तैयारी कराना।
- क्षेत्रवार/शान्तिकुञ्ज/विश्वविद्यालय/केन्द्रीय शक्तिपीठों/विशिष्ट केन्दों पर नियोजन (प्रशिक्षण)

संत समागम एवं सम्मान समारोह

1 विश्व भर के विभिन्न मत, पंथ एवं संतों को निमंत्रण

2 WORLD PEACE एवं RECONCILIATION के विशिष्ट सदस्य (माननीय प्रतिकुलपति जी) होने के कारण वैश्विक संत समागम

3 भारत के प्रतिष्ठित संतों की अगवानी परम वंदनीया माताजी शताब्दी समारोह का विधिवत शुभारम्भ।

4 उचित लगे तो माननीय प्रधानमंत्री/ माननीय राष्ट्रपति में से किसी एक की गरिमामयी उपस्थिति।

5 संतों के आवास/भोजन प्रसाद/भेंट वार्ता एवं उद्‌बोधन के लिये छोटे एवं बड़े मंचों की उचित व्यवस्था।

6 संत समागम (Charter शान्तिकुञ्ज) का निर्धारण।

7 वर्ष अंत में सभी charters का विधिवत प्रस्तुतीकरण एवं भारत सरकार को परिचित कराना।

भारत रत्न, पद्म सम्मान

प्रतिभा सम्मान समारोह

1 पूर्व में इन सभी की उपस्थित सम्बन्धी पत्र (माननीय प्रति कुलपति जी/श्रद्धेया जीजी जी की ओर से)

2 उनके रहने/भोजन/लाने-ले जाने की समुचित व्यवस्था

3 उनके सम्मान/प्रतीक चिन्ह की व्यवस्था/चयन

4 ऐसे महानुभाव जिनकी वास्तव में छवि सार्वग्रह्य एवं उज्जवल हो, उन्हीं को बुलाने की समुचित तैयारी

5 उनको बोलने एवं प्रस्तुत होने हेतु मंच की तैयारी/निर्धारण

6 इन सदस्यों का वैचारिक मंथन एवं समाज को प्रदान करने का RESOLUTION

7 SHANTIKUNJ CHALTER- भारत के प्रतिष्ठित पदक विजेताओं द्वारा देश के समुचित विकास में योगदान, भूमिका एवं संकल्प।

8 सम्मान में दी जाने वाली सामग्री, साहित्य एवं अन्य व्यवस्थाओं का पूर्व निर्धारण।

वैश्विक प्रतिभा सम्मान समारोह

लेखक (भाषा और संस्कृति वर्ग)

1 विश्व परिदृश्य में लेखन पक्ष से जुड़ी प्रतिभा की सूची/चयन/पत्र-दूरभाष/संवाद।

2 अखण्ड ज्योति से संबंधित वह विशिष्ट प्रतिभाएँ जिनकी कलम को स्थान मिला को भी निमंत्रण।

3 इनके रहने/लाने-ले जाने/भोजन की उचित व्यवस्था।

4 इनको सम्मान देने एवं साहित्य प्रदान करने का निर्धारण।

5 इनके बोलने / ज्ञान मंथन की व्यवस्था एवं प्रारूप।

7 लेखकों द्वारा युग निर्माण कलेवर, योजना एवं भूमिका पर (SHANTIKUNJ CHARTER) लाया जा सकता है।

7 अखण्ड ज्योति पत्रिका भावी निर्देश भी (माननीय प्रतिकुलपति जी) द्वारा इसमें दिये जा सकते हैं।

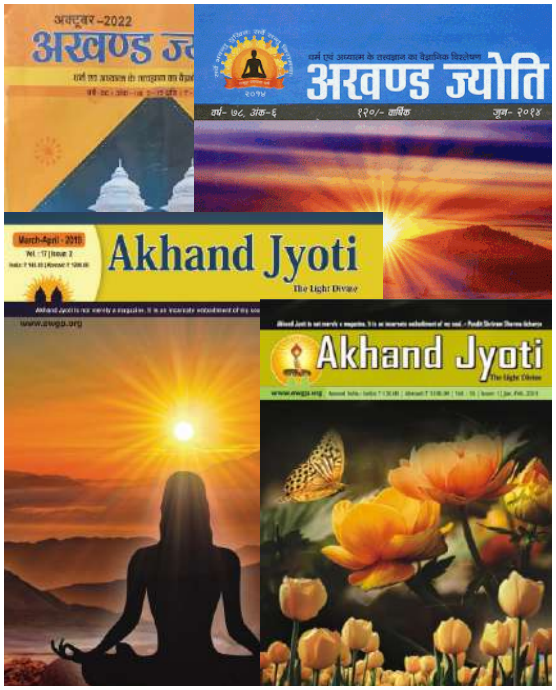

04 अप्रैल

वैश्विक प्रतिभा सम्मान समारोह

(सिनेमा, रंगमंच और खेल)

1. विश्व भर की वह प्रतिभाएँ जो खेल, सिनेमा और रंगमंचों के द्वारा समाज में नयी प्रेरणा भर रही हैं का चयन एवं पत्र व्यवहार (माननीय प्रति कुलपति जी) की ओर से।
2. इनके रहने/खाने-पीने/लाने-ले जाने की समूचित व्यवस्था।
3. इनको सम्मानित करने की तैयारी
4. इनके द्वारा बोलने/सामूहिक ज्ञान मंथन करने हेतु मंचों का निर्धारण।
5. लोक रंजन से लोक मंगल एवं शरीर रूपी मंदिर को ठीक रहने में सम्पूर्ण भारत वर्ष की जिम्मेदारी हेतु एक RESOLUTION पास कराना।
6. SHANTIKUNJ CHARTER के रूप में एक उल्लेखित खेल एवं संस्कृति संरक्षण नीति निर्धारण भी माननीय प्रतिकुलपति जी के निर्देशन में भारत सरकार को सौंपा जा सकता है।

शताब्दी समारोह 12 माह-12 कार्यक्रम

समाज सेवी सम्मान समारोह

1 सम्पूर्ण भारत के ऐसे समाज सेवी जो लोक मंगल में निरत हैं, उनकी सूची, सम्पर्क एवं निर्धारण। (पत्र एवं दूरभाष)

2 युग निर्माण में लगे हुये वह मान्धाता जो परोक्ष रूप से सहयोगी हैं, उन्हें भी समाहित किया जा सकता है।

3 इनके आवास/भोजन व्यवस्था/ लाने और छोड़ने की व्यवस्था।

4 स्वागत एवं सम्मान हेतु निर्धारण।

5 'सेवा परमो धर्माः' द्वारा भारत वर्ष की खुशहाली और सौन्दर्यता के लिये प्रतिबद्ध Resolution

6 सेवा-सुर्सुवा एवं समाज को देने हेतु (SHANTI KUNJ CHALTE) एवं भारत सरकार के लिये एक ROAD MAP

9 जन कल्याण हेतु नये शान्तिकुञ्ज केन्द्रों हेतु आर्थिक संकल्प एवं घोषणा करवाई जा सकती है।

वैश्विक उत्कृष्ट जन सेवक समागम-सम्मान

1 वैश्विक स्तर पर श्रेष्ठ जन-सेवकों राजनैतिक सदस्यगण की सूची/सम्पर्क एवं नियंत्रण पत्र।

2 इनके आवास/भोजन एवं अन्यान्य व्यवस्था।

3 स्वागत-सम्मान हेतु निर्धारित व्यवस्था बनाना।

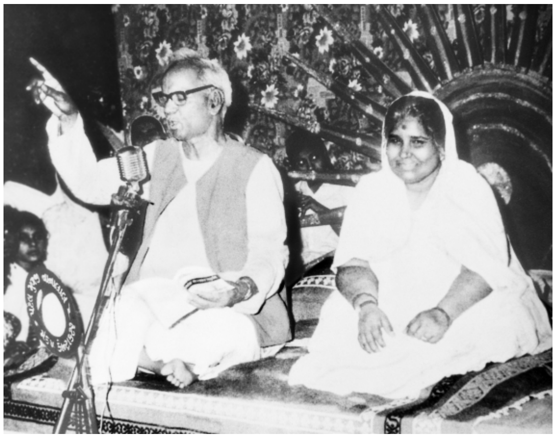

4 इनके बोलने, लोक संवाद की उचित व्यवस्था।

5 वैचारिक मंथन एवं देश को स्वस्थ दिशाधारा हेतु एक वैश्विक मार्गदर्शन देने हेतु Resolution

6 (SHANTIKUNJ CHALTEL)- समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान एवं समसामयिकता पर एक उल्लेखित श्वेत पत्र जारी किया जा सकता है।

7 पूज्य आचार्य जी का जीवन दर्शन और लोक सेवी की जीवन शैली पर एक विशिष्ट उद्बोधन (आदरणीय प्रतिकुलपति जी) द्वारा दिया जा सकता है ।

बुद्धिजीवी सम्मान समारोह

डॉक्टर/इंजीनीयर/वकील/प्रोफेसर/जज आदि)

1 विभिन्न वैश्विक विश्वविद्यालयों/क्षेत्रीय प्रतिभाओं की इसमें भागीदारी।

2 उनके सम्मान/आवास/भोजन आदि व्यवस्थाओं का निर्धारण।

3 विचार क्रान्ति अभिमान एवं बुद्धिजीवीयों की भूमिका हेतु दिशाबोध।

5 साथ ही विशिष्ट प्रतिभाओं द्वारा सशक्त राष्ट्र निर्माण पर (SHANTIKUNJ CHARTER) एवं दिशाबोध।

लोक कला/संस्कृति/ कलाकार सम्मान समारोह

1 **क्षेत्रीय लोक शैलीः** संस्कृति के संरक्षण में समर्पित सदस्यों का चयन एवं सम्पर्क (पत्र एवं दूरभाष द्वारा)

2 उनके रहने / भोजन / सम्मान हेतु व्यवस्था।

3 भारत के नवोन्मेष में लोक कला संरक्षण एवं वर्तमान प्रासंगिकता पर SHANTIKUNJ CHARTER एवं दिशाबोध।

नारी शक्ति प्रतिभा सम्मान समारोह

(खेल, सिनेमा और रंगमंच)

1 21वीं नारी सदी में उल्लेखित विभिन्न क्षेत्रों की नारी शक्ति की सूची / सम्पर्क एवं पत्र व्यवहार / नियंत्रण।

2 युग निर्माण में परम वंदनीया माताजी, परम श्रद्धेया जीजी एवं आदरणीया शैफाली जीजी की निर्णायक भूमिका पर संवाद-परिचर्चा।

3 आने वाले सम्मानित सदस्यों के आवास / भोजन / सम्मान हेतु उचित व्यवस्था।

4 विषय निर्धारण / मंच / परिचर्चा / विचार मंथन हेतु तैयारी।

5 राष्ट्र निर्माण में नारी की निर्णायक भूमिका, अवसर एवं प्रतिबद्धता पर मार्गदर्शन।

6 (SHANTIKUNJ CHARTER)- 21वीं सदी नारी सदी हेतु Road Map दिया जा सकता है।

युग निर्माण-विभूति सम्मान समारोह

1. सम्पूर्ण भारत के वह अति विशिष्ट लोक सेवी (जीवित/मरणोपरांत) का चयन / पत्र-व्यवहार / संवाद।
2. इनके (परिजनों) के रहने, भोजन/सम्मान की उचित व्यवस्था।
3. कुछ को (युवा नेतृत्व / LIFETIME ACHIEVEMENT / आदर्श दंपत्ति) जैसे सम्मान दिये जा सकते हैं।
4. पुरानों को समेटने का यह विशिष्ट प्रयोग हो सकता है।

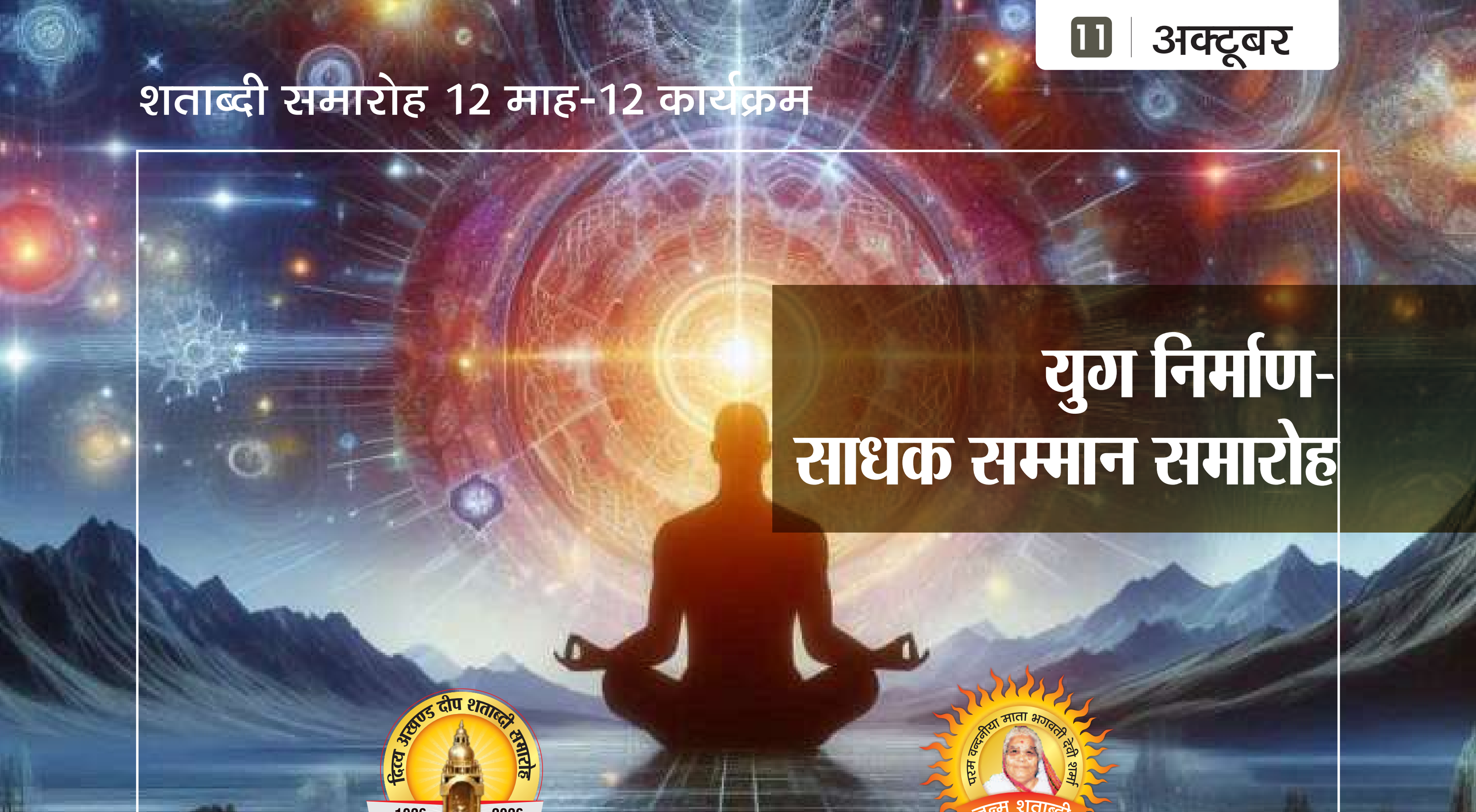

युग निर्माण-साधक सम्मान समारोह

1 वह क्षेत्रीय/केन्द्रीय प्रतिभाएँ जिन्हें साधना प्रिय हैं और मौन-साधक की भाँति समर्पित भाव से सेवारत है। उनसे सम्पर्क/पत्र व्यवहार/संवाद।

2 आवास / भोजन / सम्मान की उचित व्यवस्था।

3 सुरभूत स्मृतियाँ / साधना संस्मरण / आचार्य श्री के अनुदान-वरदान हेतु चर्चा/गोष्ठी।

4 श्रद्धा-संवर्धन सत्र / मार्गदर्शन / दिशाबोध।

प्रवासी भारतीय सम्मान समारोह

1 विश्वभर में मौजूद युग सृजन सैनिकों को केन्द्र में बुलाना, सूची तैयार करना एवं उनसे पत्र व्यवहार।

2 पाँच जोन (विदेश) के हिसाब से उनकी सहभागिता/सम्मान/संबोधन।

3 निर्माण योजना - वर्ष 2026 के आगे का (VISION/ROAD MAP)– माननीय प्रतिकुलपति जी द्वारा।

4 वैश्विक प्रतिभाएँ एवं युग निर्माण के प्रमुख केन्द्रों पर समयदान / अंशदान प्रतिभा सुनियोजन हेतु मार्गदर्शन एवं दिशाबोध।

5 नये देशों/केन्द्रों/परिजनों तक पहुँचने की योजना एवं क्रियान्वन स्वरूप।

6 SHANTIKUNJ RESOLUTION/ CHARTER - भारत के सांस्कृतिक दूतों की जीवनशैली, आदर्श एवं विरासत को संजोता वैश्विक युग निर्माण का स्वरूप प्रस्तुत किया जा सकता है।

चेतना जागरण शिविर

अध्ययन एवं अभ्यास

1. मानवीय चेतना के विविध आयाम
2. मानवीय उत्कर्ष
3. साधना से सिद्धि
4. आत्य प्रगति के दो आधार- जप और ध्यान
5. मैं क्या हूँ ?
6. गहना कर्मणों गति
7. गायत्री महाविज्ञान
8. पातञ्जलि योग सूत्र
9. पञ्च प्राण और कोश
10. चेतना जागरण- बोध एवं मार्गदर्शन
11. शंका समाधान
12. मार्गदर्शन (प्रति कुलपति जी)
13. दर्शन, प्रणाम, आशीर्वाद (श्रद्धेया जीजी की)

समयावधि	5-7 दिन
शैक्षणिक योग्यता	सभी के लिए
विशेष योग्यता	युग शिल्पी सत्र
शिविर की तिथि	प्रत्येक माह
शिविर का स्थान	शान्तिकुञ्ज एवं देसंविवि
संचालन	शिक्षण प्रशिक्षण प्रकोष्ठ

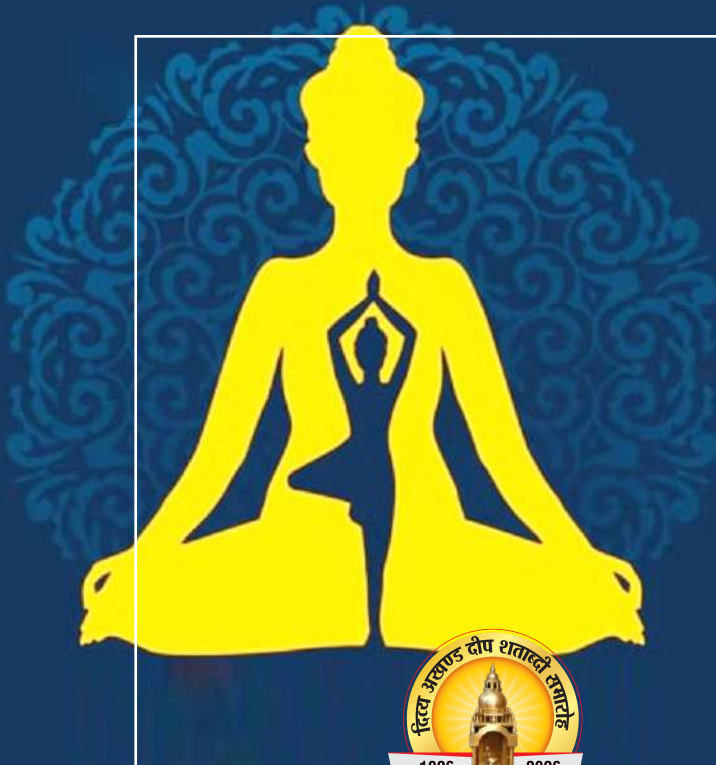

समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन शिविर

अध्ययन एवं अभ्यास

1 स्वास्थ्य एवं जीवनशैली
2 जीवन दर्शन
3 मानवीय जीवन का उत्कर्ष
4 स्वास्थ एवं आयुर्वेद
5 पातञ्जलि योग सूत्र एवं जीवन
6 चरक संहिता एवं समग्र स्वास्थ
7 जप, ध्यान एवं यज्ञ उपचार
8 कर्म फल सिद्धान्त एवं स्वरूप जी
9 वन प्रबंधन के मूलभूत सिद्धान्त
10 अन्नौ नैः मनः
11 पंच कोष-पंच प्राण
12 पंचकर्म एवं नेचुरोपैथी
13 भाव संवेदना का जागरण
14 जल्दी मरने की उतावली न करें
15 स्वास्थ्य प्रबंधन-मार्गदर्शन
16 भेंटवार्ता - आशीर्वाद

समयावधि	7 दिन
शैक्षणिक योग्यता	12 वीं
विशेष योग्यता	नौ दिवसीय साधना सत्र
शिविर की तिथि	प्रत्येक माह
शिविर का स्थान	शान्तिकुञ्ज एवं देसंविवि
संचालन	शिक्षण प्रशिक्षण प्रकोष्ठ

नौ दिवसीय संजीवनी साधना शिविर

अध्ययन एवं अभ्यास

1. साधना मार्गदर्शन- संकल्प और मानसिक तैयारी
2. जीवन साधना के स्वर्णित सूत्र
3. उपासना के दो चरण - जप और ध्यान
4. मानवीय उत्कर्ष -
5. विचार क्रान्ति अभियान -
6. यज्ञ का वैज्ञानिक विवेचन
7. आयुर्वेद पूरक जीवन शैली
8. उपासना, साधना, आराधना - स्वरूप एवं दर्शन
9. मंत्र शक्ति- वैज्ञानिक विवेचन वैज्ञानिक अध्यात्मवाद
10. डीजिटल क्रान्ति और साधक
11. साइबर सतर्कता और जीवनशैली
12. जल्दी मरने की उतावली न करें

13 साधना - फलश्रुति एवं मार्गदर्शन

14 प्रज्ञा पुराण

15 संगीत- लोक मंगल से लोक रंजन

16 परामर्श, भेंट, आशीर्वाद

समयावधि	9 दिन
आयु	18 वर्ष से अधिक
विशेष योग्यता	गायत्री मंत्र जप
शिविर की तिथि	प्रत्येक माह
शिविर का स्थान	शान्तिकुञ्ज
संचालन	शिक्षण प्रशिक्षण प्रकोष्ठ

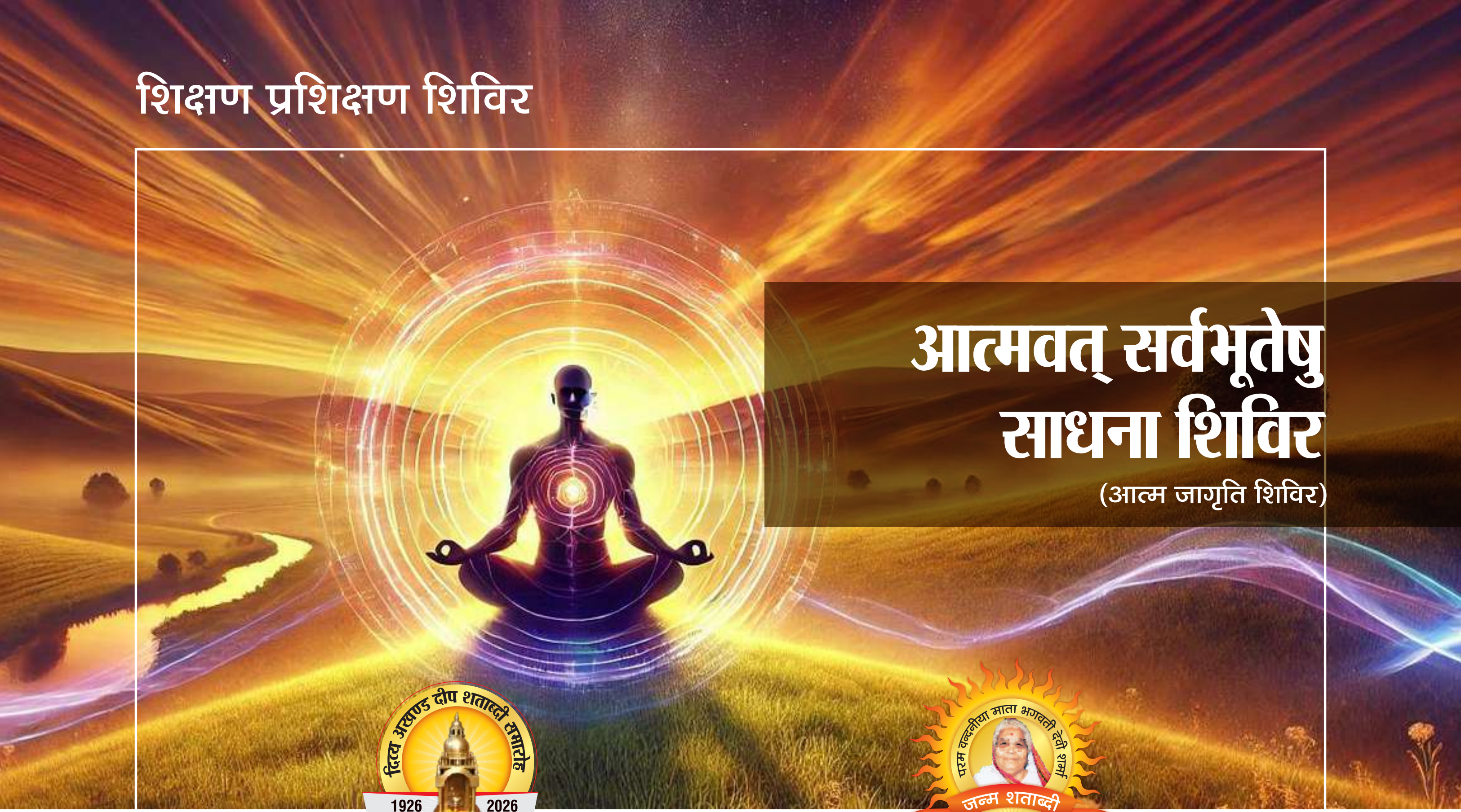

आत्मवत् सर्वभूतेषु साधना शिविर

(आत्म जागृति शिविर)

अध्ययन एवं अभ्यास

1 मैं क्या हूँ ?
2 साधना से सिद्धि
3 वसुधैव कुटुम्बकम्
4 जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र
5 कर्मफल के सिद्धान्त
6 उपासना, साधना, आराधना
7 लोकरंजन से लोकमंगल
8 मंत्र विज्ञान
9 वैज्ञानिक अध्यात्मवाद
10 समस्त विश्व को भारत के अनुदान
11 पूज्य गुरुदेव कर्तव्य एवं व्यक्तित्व
12 मानवीय उत्कर्ष
13 योग, यज्ञ एवं प्राणायाम
14. वेद, उपनिषद् एवं संहिताओं का परिचय
15. साधना सम्बन्धी - मार्गदर्शन, शंका समाधान
16. भेंटवार्ता, आशीर्वाद

समयावधि	5-7 दिन
शैक्षणिक योग्यता	सभी के लिए
विशेष योग्यता	युग शिल्पी सत्र
शिविर की तिथि	प्रत्येक माह
शिविर का स्थान	शान्तिकुञ्ज एवं देसंविवि
संचालन	शिक्षण प्रशिक्षण प्रकोष्ठ

शिक्षण प्रशिक्षण शिविर

वेद, उपनिषद्, संहिता परिचय शिविर

अध्ययन एवं अभ्यास

1. आर्ष साहित्य परिचय
2. वेद परिचय
3. उपनिषद् परिचय एवं मानवीय जीवन
4 पातञ्जलि योग सूत्र
5 संहिताओं का स्वरूप - चरक, सुश्रुत
6 पं. श्रीराम शर्मा जी एवं आर्ष साहित्य
7 वैज्ञानिक अध्यात्मवाद
8 आर्ष साहित्य - वर्तमान परिपेक्ष्य में
9 रामायण - दर्शन, स्वरूप एवं प्रासंगिकता
10 गीता - स्वरूप एवं मैनेजमेण्ट
11 मंत्र विज्ञान - दर्शन एवं वैज्ञानिकता
12 मैं क्या हूँ ?
13 वैज्ञानिक अध्यात्मवाद
14 दर्शन - स्वरूप एवं प्रकार
15 भारतीय ज्ञान परम्परा- मौलिक परिचम
16 भारतीय संस्कार परम्परा - परिचय
17 यज्ञ एवं गायत्री का वैज्ञानिक विवेचन
18 मार्गदर्शन, शंका समाधान, आशीर्वाद

समयावधि	5-7 दिन
शैक्षणिक योग्यता	12 वीं
विशेष योग्यता	नौ दिवसीय साधना सत्र
शिविर की तिथि	प्रत्येक माह
शिविर का स्थान	शान्तिकुञ्ज एवं देसंविवि
संचालन	शिक्षण प्रशिक्षण प्रकोष्ठ

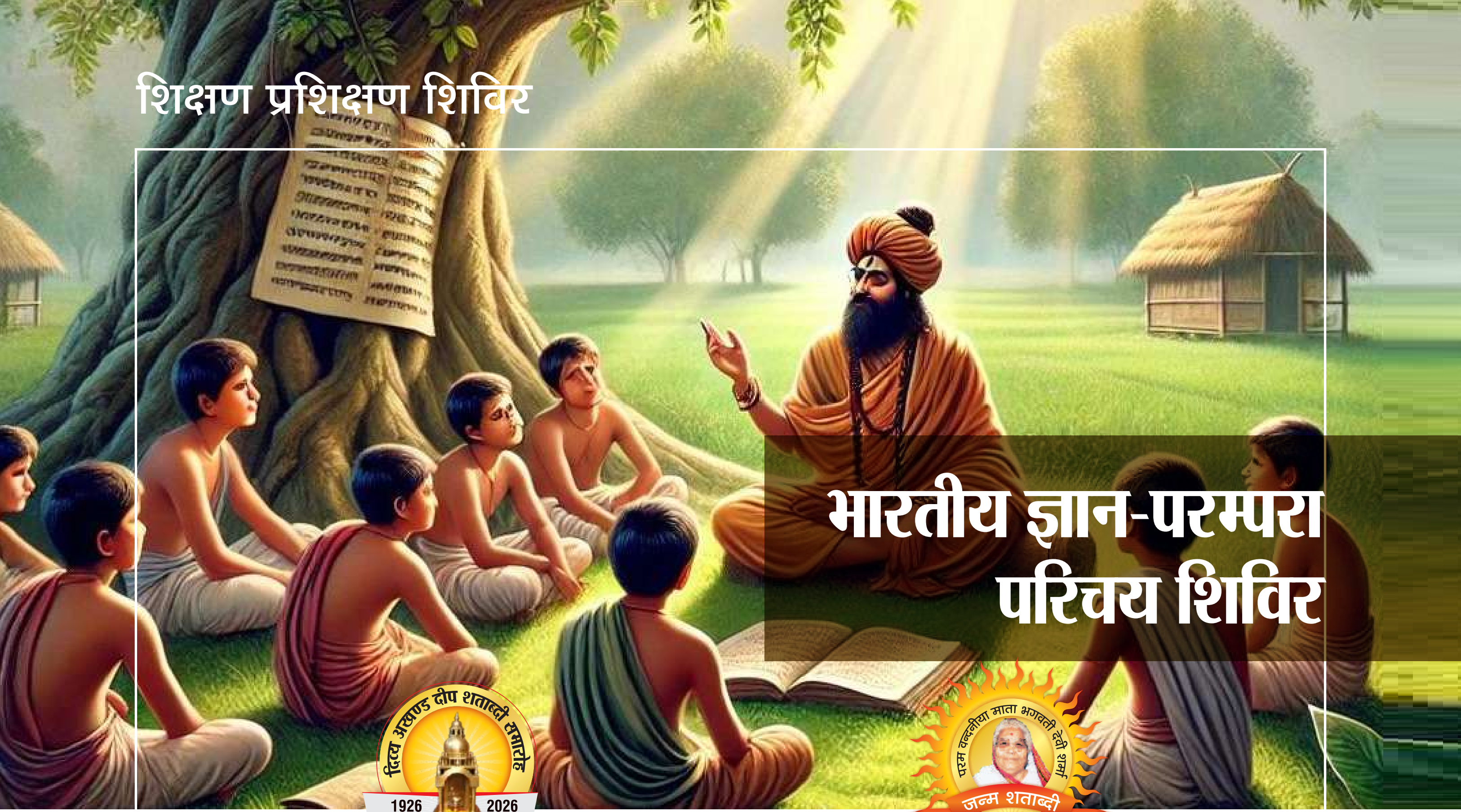

भारतीय ज्ञान-परम्परा परिचय शिविर

अध्ययन एवं अभ्यास

1 IKS - पश्चिम एवं स्वरूप
2 आर्ष साहित्य का परिचय
3 मंत्र विज्ञान, वैज्ञानिक स्वरूप
4 गायत्री एवं यज्ञ का वैज्ञानिक विवेचन
5 योग, यज्ञ, प्राणायाम -परिचय
6 संस्कार परम्परा
7 पूज्य गुरुदेव एवं IKS
8 ध्यान, धारणा, समाधि - परिचय
9 मानवीय उत्कर्ष एवं IKS
10 वेद, उपनिषद्, आरण्यक, संहिता-परिचय
11 चार आश्रम, पंच कोस - परिचय
12 षट्चक्र एवं लोक-परलोक परिचय
13 संस्कार एवं मरणोत्तर जीवन
14 वैज्ञानिक अध्यात्मवाद
15 विचार क्रान्ति अभियान - प्रासंगिकता
16 A.I. स्वरूप एवं IKS का समन्वय
17 परामर्श, भेंटवार्ता एवं आशीर्वाद

समयावधि	5-7 दिन
शैक्षणिक योग्यता	12 वीं
विशेष योग्यता	नौ दिवसीय साधना सत्र
शिविर की तिथि	प्रत्येक माह
शिविर का स्थान	शान्तिकुञ्ज एवं देसंविवि
संचालन	शिक्षण प्रशिक्षण प्रकोष्ठ

Life Management Training Program

अध्ययन एवं अभ्यास

1	Quality of life
2	Shen Management
3	Time Management
4	Basics of Life - Principle & Practicality
5	Work pressure & Life
6	Work place & spirituality
7	Leadership - style & practicality
8	Work Load Management
9	Knowledge & Wisdom
10	Organizational Performance
11	TEAM Building E&ercise
12	Presentation skills
13	SOP of Life skills
14	Learn, Delearn & Relearn
15	Training the trainer's
16	Holistic Approach of life style
17	QSA
18	Guidance & Blessings.

समयावधि	5-7 दिन
शैक्षणिक योग्यता	12 वीं
विशेष योग्यता	नौ दिवसीय साधना सत्र
शिविर की तिथि	प्रत्येक माह
शिविर का स्थान	शान्तिकुञ्ज एवं देसंविवि
संचालन	शिक्षण प्रशिक्षण प्रकोष्ठ

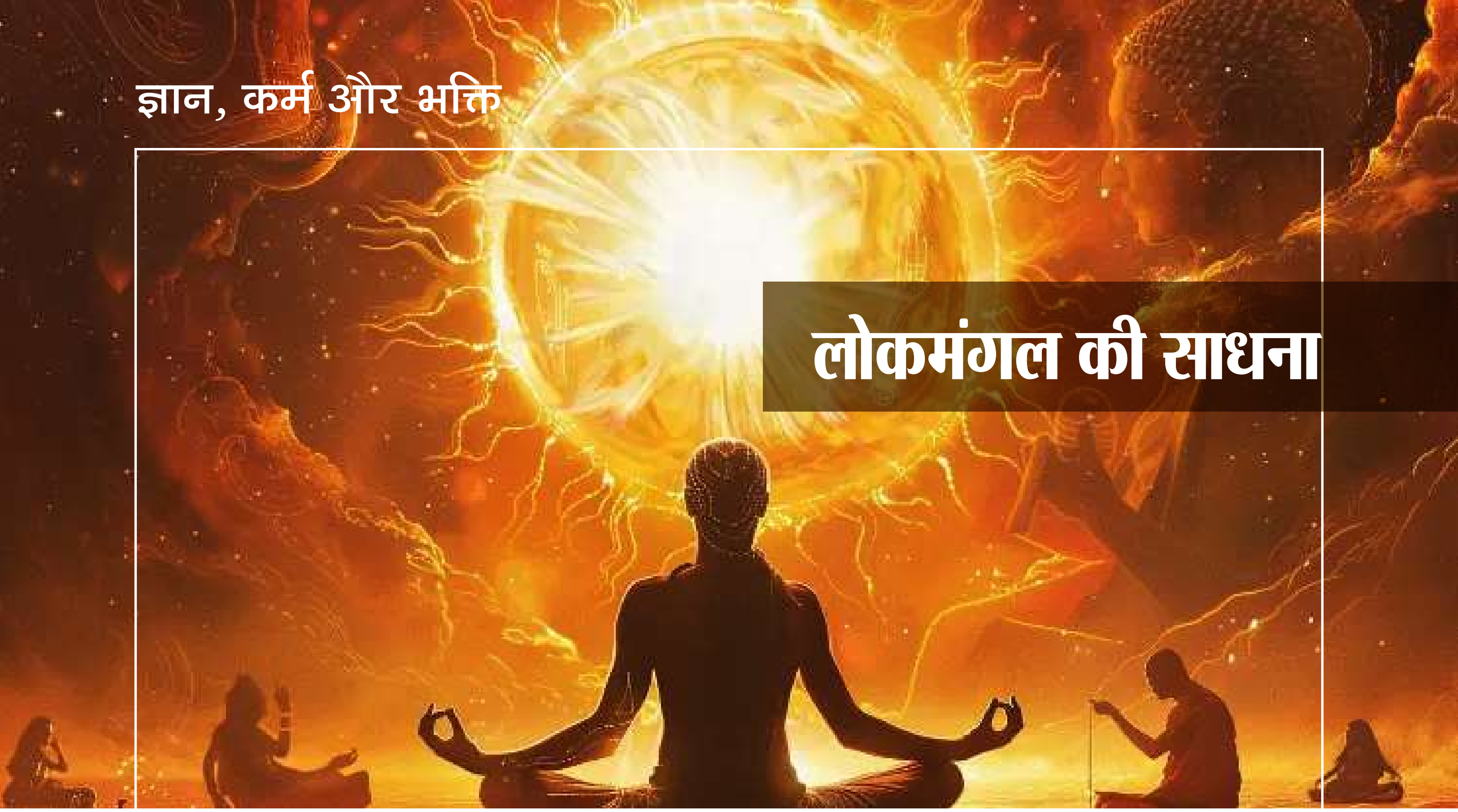

लोकमंगल की साधना

सदा सर्वदा आनन्द उभरता रहे, इसका एक ही आधार है कि हर किसी को आत्म-स्वरूप माना जाय। इसी मनःस्थिति को चरितार्थ करने के लिए लोकसेवा का व्रत लेना पड़ता है। वह लोक सेवा भी इच्छुकों की इच्छा पूर्ति के लिए नहीं, वरन् उसे पवित्र, परिष्कृत प्रखर बनाने के लिए निश्चयपूर्वक नियोजित रहती है। यही है लोक मंगल की साधना। इसी को सत्प्रवृत्ति संवर्धन या जन मानस का परिष्कार कहते हैं।

सेवा धर्म का यही केन्द्र बिन्दु है। यथा अवसर विपत्तिग्रस्तों की सहायता करना, संकटों से उबारना प्रगति में सहयोग करना भी उदारता का चिन्ह है और सराहनीय भी। पर न तो हर कोई इतना कर सकने में समर्थ होता है और न विपत्तिग्रस्त ही हर समय, हर जगह हाथ पसारे खड़े होते हैं।

इसलिए धन, साध्य, दानशीलता यदा-कदा ही जब कभी बन पड़ती है किन्तु आत्म परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्धन की प्रक्रिया ऐसी है जिसे घर बाहर अपनों परायों से निरन्तर सम्बद्ध किया जा सकता है। जिनने आत्मीयता को सुविस्तृत करने और उसे उत्कृष्टता के साथ जोड़ने का रहस्य समझ लिया, समझना चाहिए कि उसने भाव संवेदनाओं से भरा पूरा भक्तियोग सिद्ध कर लिया।

आत्मपरिशोधन

आत्मपरिशोधन सबसे अधिक सरल भी है और सबसे अधिक कठिन भी। सरल इस माने में कि हम जब पशुओं, परिजनों, नौकरों से मनमर्जी का काम करा सकते हैं तो अपने आपे को गलत दिशा से तोड़-मरोड़कर सीधे रास्ते चल पड़ना क्यों दुष्कर होना चाहिए। कठिन इसलिए है कि आदतें विषाणुओं की तरह नस-नस में, कण-कण में, चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में इस प्रकार जड़ें जमा लेती हैं, जिन्हें सहज ही छुड़ा सकना कठिन होता है। चिपकी हुई जोंक पेट भरकर खून पी लेने पर ही छूटती है; भले ही खींचने पर वह टूट क्यों न जाए!

दुष्प्रवृत्तियों का, बुरी आदतों का स्वरूप भी प्रायः ऐसा ही है। समझाने-बुझाने से तो वे मानती ही नहीं। उनके लिए तब तितिक्षा स्तर का कदम उठाने की आवश्यकता पड़ती है और अपने अन्दर वाले भगवान और शैतान के बीच खड़े किए गए इस महाभारत में स्वयं दर्शक मात्र न रहकर अर्जुन की तरह गाण्डीव साधने की और हस्त-कौशल की कुशलता अपनानी पड़ती है।

सपेरा हर समय साँप को पालते, खिलाते हुए भी उसकी हरकतों पर पूरा ध्यान रखता है, अन्यथा उसे जान से हाथ धोना पड़ सकता है। शेरों से सरकस में मनमाने काम कराने वाले रिंग मास्टर कितने कौशल और साहस का परिचय देते हैं! ठीक ऐसा ही पराक्रम कर अपने को पशु-स्तर से परिवर्तित करके सुसंस्कारी मनुष्य स्तर का देवोपम बनाना पड़ता है। इस तीखी-मीठी सुधार और दुलार की उभय-पक्षीय प्रक्रिया का नाम %दम% है। अन्य किसी को दबाना भले ही विचारणीय हो पर अपना दमन-प्रशिक्षण-परिवर्तन तो करना ही चाहिए। योगाभ्यासी के लिए यह नितांत आवश्यक है।

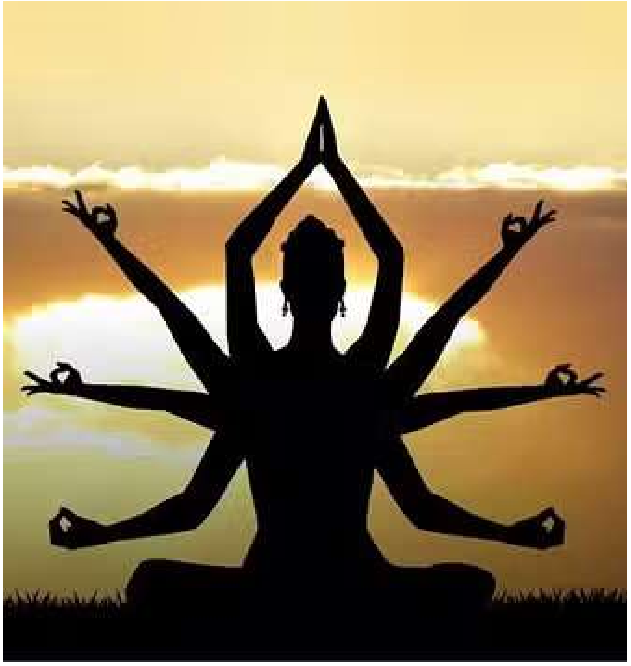

तपस्या

धातुओं के टुकड़े जोड़ने में वेल्डिंग प्रक्रिया काम में लाई जाती है। तप को आत्मा और परमात्मा को एकसूत्र में जोड़ देने वाली वेल्डिंग पद्धति कह सकते हैं। खदान में से कच्चा लोहा निकलता है, तब उसमें मिट्टी का बहुत बड़ा भाग मिला रहता है। इसे बार-बार भट्टियों में डालकर शुद्ध किया जाता है। इसी क्रम के बार-बार चलने से उसे फौलाद (स्टेनलेस स्टील) बनने का अवसर मिलता है। रसायन शास्त्री अभ्रक जैसी सामान्य वस्तु को बार-बार अग्नि-संस्कार करके रसायन बना देते हैं। धातुओं के जरण- मरण की, विषों के संशोधन करने की, लगातार घोटने-पीसने की विधियाँ चिकित्सा-क्षेत्र के रसायन शास्त्र में आती हैं। स्वभाव और संस्कारों की घुटाई - पिसाई को तपश्चर्या कहा जा सकता है। एक में पदार्थ को कष्टसाध्य परिस्थिति में प्रवेश करके अपना महत्त्व बढ़ाना पड़ता है, दूसरे में व्यक्ति को स्वेच्छापूर्वक उच्चस्तरीय प्रयोजनों में अपने ऊपर नियंत्रणों, प्रतिबंधों और सत्प्रयोजनों के लिए आवश्यक कठिनाइयाँ शिरोधार्य करनी होती हैं। तपस्या इसी को कहते हैं।

रँगाई से पहले धुलाई आवश्यक होती है। धोबी कपड़े का मैल छुड़ाने के लिए उसे उबालने, साबुन में गलाने, पत्थर पर पीटने, धूप में सुखाने जैसे कई कठिन उपचार काम में लाता है। यदि ऐसा न किया जाए तो कपड़े की मलिनता दूर न होगी। वह धवल-उज्ज्वल दिखाई न पड़ेगा। रंग तो उस पर चढ़ेगा ही नहीं। व्यक्तित्व को निर्मल बनाने और उच्च संस्कारों से सुसम्पन्न करने की प्रक्रिया को धुलाई, रँगाई के समतुल्य माना जा सकता है। सोने को, शोधने से लेकर आभूषण बनाने तक की प्रक्रिया में, लगातार अग्नि-सम्पर्क और हथौड़ी की चोटें सहनी पड़ती हैं। इससे इनकार करने पर उसे गले का आभूषण और मस्तक का अलंकार बनने का अवसर नहीं मिल सकता। प्राचीनकाल में गुरुकुलों का कष्टसाध्य जीवन अमीर घर के बालकों को भी अंगीकार करना पड़ता था। उनके अभिभावक जानते थे कि इससे कम में उनके प्राणप्रिय बालकों का भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता।

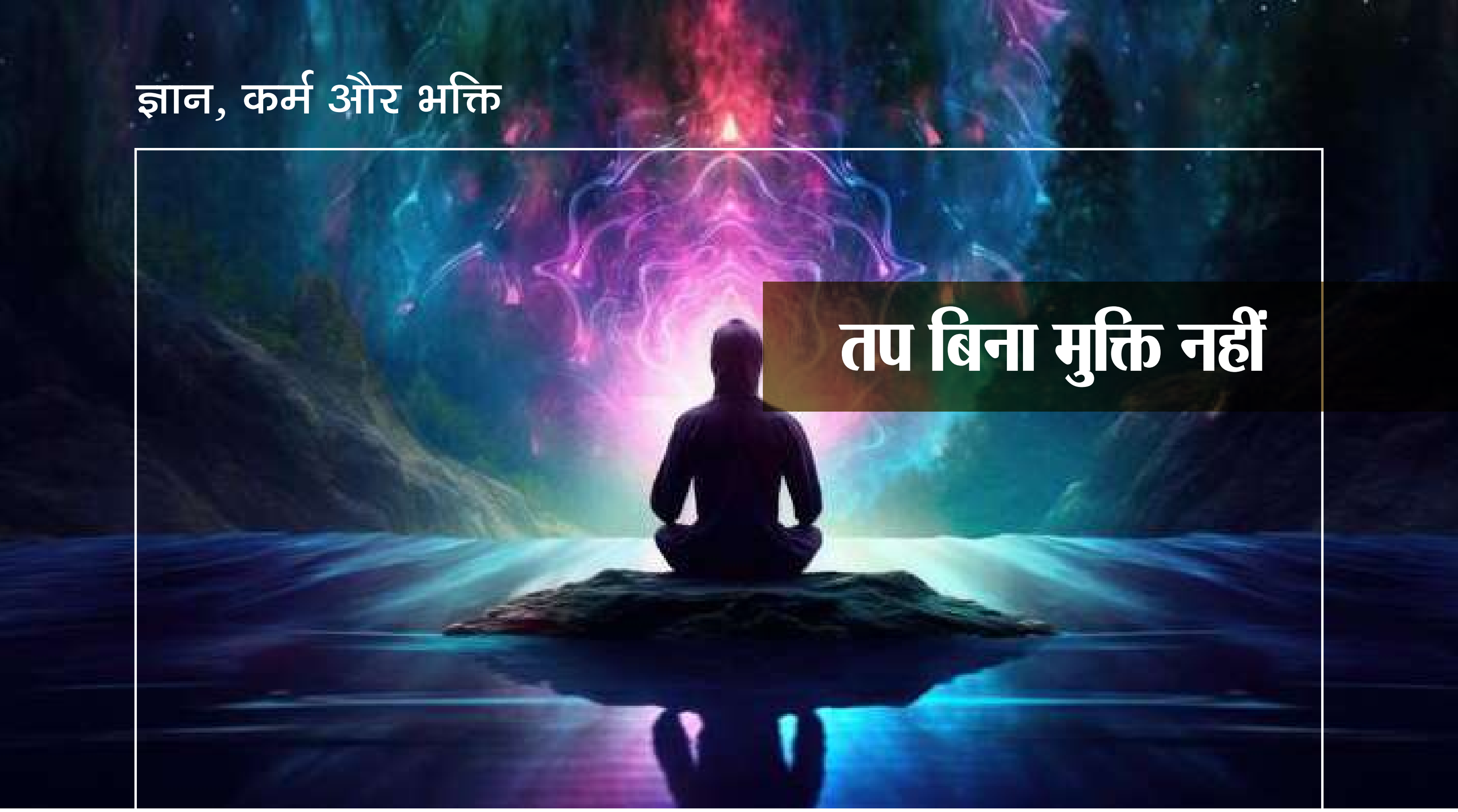

तप बिना मुक्ति नहीं

इस संसार में सबसे श्रेष्ठ यदि कुछ है तो वह तप है। तप वह महान विद्या है जिसके द्वारा मनुष्य अपने कषाय-कलमशों को जलाकर अपनी बुद्धि को सन्मार्ग की दिशा में ले चलता है। जिसने तप करना सीख लिया, समझो उसका जीवन हर प्रकार से उन्नत होने योग्य बन बैठा है। तप एक ऐसा महान सम्बल है जिसके द्वारा मनुष्य अपने अनन्त वैभव से परिचित होता है, उसे उच्च-उमंगे एवं सत्साहस से भरी प्रेरणा हस्तगत होती है, मनुष्य की प्रतिभा सच्चे अर्थों में अपने विकास की दिशा में बढ़ चलती है। तप क्या है? अपने अंतरायों को जलाना, दुष्टप्रवृत्तियों से जूझ पड़ना एवं कभी भी हृदय में विद्यमान महान ईश्वर की अवज्ञा न करना। यही तप का स्वरूप है। आप तपस्वी बनिए फिर देखिए कि जीवन कैसा परिवर्तित होता चला जाता है, उसके भीतर से प्रकाश की किरणें स्वतः प्रादुर्भूत होंगी एवं वह फिर पतन के गर्त में गिर नहीं पाएगा। अपने भीतर की महान ऊर्जा से सुचालित होना ही तप की पहचान है, जब हम ऐसा कर लेंगे तब कोई भी शक्ति हमें अपने पथ की गरिमा से पदच्युत करने में सफल नहीं होगी, अपना जीवन श्रेष्ठता के पदचिन्हों पर निरंतर बढ़ता हुआ दिखाई देगा। तप में अंतसः के शोधन की क्षमता तो है ही साथ में वह बाह्य जीवन की सुव्यवस्था एवं उन्नति में भी उतना ही कारगर है, तपस्वी की एक पहचान है कि वह अपने प्रत्येक विचार पर, प्रत्येक कार्य एवं नीति पर समुचित ध्यान देता है, उन्हें परिष्कृत करने को उसकी आत्मा सदा लालायित रहती है। जिसने तप-विद्या सीख ली, अब उसके जीवन में कोई भी संकट शेष नहीं रह सकता है। तप के प्रताप से मनुष्य हर प्रकार की दुख-दुविधा से मुक्त हुआ अपने को शान्तिदायक उन्नति एवं प्रसन्नतापूर्ण प्रगति की दिशा में प्रेरित कर पाता है। तप वह श्रेष्ठ कुञ्जी है, जो कि प्रत्येक अवस्था में, प्रत्येक गतिविधि के मध्य हमें ऊर्जा एवं उल्लास प्रदान करती है। तप से अनुप्राणित जीवन सच में दर्शनीय है एवं उसे परमात्मा का प्रकाश एवं आशीर्वाद नित-नई उमंगों के साथ मिलता है। तप ही महामानव बनने का सुआधार है।

जितने भी तपस्वी हुए हैं उनमें एक ही बात समाई है, वह है अंतःकरण की उच्च-प्रेरणा एवं सत्साहस भरी नीति। जो यह कर सका, उसके जैसा भाग्यशाली दूसरा कोई नहीं। जिसके अंतःकरण में परमात्मा की प्यास एवं निरंतर उसके अनुग्रह से सुसज्जित होने की नीति जन्म ले गई, समझों उसने जीवन को सच्चे अर्थों में जीना स्वीकारा। अब उसका जीवन साधारण नहीं रह जाएगा, तप की ऊर्जा-रश्मियों से मन की क्षुद्रता एवं अंतःकरण की विषमता दोनों समाप्त होते हैं। जहाँ तप है वहाँ कभी भी अंधकार रह नहीं सकता है, तप ही जीवन का प्रकाश-पथ है।

अपने स्वरूप का ज्ञान

अंतः प्रकाश का दर्शन आंतरिक शुद्धि से बुद्धिवादियों ने कुछ दिनों पूर्व तक यह घोषित किया था कि "विचार अपने साम्राज्य का स्वयं शासक है, उसे किसी भी बाहरी सहायता की आवश्यकता नहीं।" इस तथ्य को वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया तथा उसमें एक कड़ी और जोड़ते हुए कहा कि "प्रकृति ही हमारी सच्ची अध्यापिका है।" परिणाम यह निकला कि प्रकृतिगत प्रेरणाओं को ही मार्गदर्शक माना गया। विचारशक्ति भी उसी के इर्द-गिर्द घूमती रही। प्रकृति को ही शिक्षक मान लिया गया तथा विचारों का ताना-बाना उस शिक्षक के आदेशों के पालन करने में नियोजित हो गया। परिणाम यह हुआ कि मन को खुली छूट मिली। बुद्धि शरीर की आवश्यकता एवं स्वार्थों को ही सिद्ध करने में लग गई। अंतःकरण में उठने वाली प्रेरणाओं, भावनाओं को बुद्धि दबाती हुई निरंकुश होती चली गई।

उस समय से लेकर अब तक संसार के ज्ञान में बहुत वृद्धि हुई है। मनोविज्ञान के नए-नए क्षेत्र ढूँढ़ निकाले गए, चेतना की रहस्यमय परतों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या हुई। अब नवीन युग के विज्ञानवेत्ता बुद्धिबल की अपेक्षा उन तत्त्वों को ढूँढ़ने में अधिक प्रयत्नशील हैं, जो मनुष्य के मानवोचित गुणों को उभारते, बढ़ाते हों; एक मनुष्य को दूसरे के नजदीक लाने तथा परस्पर मिलाने का प्रयत्न करते हों। बुद्धिवाद अब अपने सीमित दायरे से निकलकर उन क्षेत्रों में बढ़ रहा है, जो मनुष्य की चेतना का विकास करते हैं। अब यह बात स्वीकार की जाने लगी है कि शरीर एक चलता-फिरता यंत्र नहीं, वरन एक ऐसी चेतना का अंश है, जिसका संबंध विश्वचेतना के साथ स्वाभाविक रूप से जुड़ा हुआ है।

महर्षि पतंजलि कहते हैं कि मनोवृत्तियों का निरोध न होने से ही मनुष्य शरीर का गुलाम बन जाता है और कुसंस्कारों के वशीभूत हुआ इधर-उधर मारा फिरता है; किन्तु यदि वृत्तियों का परिमार्जन किया जाए तो उसे अपने स्वरूप का वास्तविक ज्ञान हो जाता है। अलग-अलग दीखते हुए भी आत्मा, मन, इंद्रियों का आपस में अन्योन्याश्रित संबंध है। यदि मन इंद्रियों की आवश्यकता की पूर्ति में लिप्त है तो आत्मा इंद्रियों की दासी बन जाती है, किन्तु यदि मन को आत्मा की ओर मोड़ दिया जाए तो इंद्रियाँ बाह्य जगत से छूटकर चेतनशक्ति की सहायता करने लगती हैं। मनःशक्ति पर ही शरीर का सारा कारोबार अवलंबित है। न केवल शरीर-संचालन, वरन जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति भी इसके योगदान पर निर्भर है।

आत्मोद्धार का महान संकल्प

हम जिस पथ पर बढ़ रहे हैं वह अत्यन्त ही शोभायुक्त है। मानवीय गुण-गरिमा के अंतराल में एक विशिष्टता छिपी है। उसे पहचान लेने पर ही वास्तव में जाग्रति का सुस्वप्न साकार हो सकता है। जिस चीज की हमें आवश्यकता है वह अपने दिव्य केन्द्र से जुड़ना ही है। उसके उपरान्त ही प्रेरणा अपने दिशाक्रम को प्राप्त करती है तथा जीवन में कोई भी कमी नहीं रह जाती। हमारे कष्ट-विकार मिट जाते हैं तथा हम स्वयं को नए ही रूप में परिलक्षित होता पाते हैं। यही ब्रह्म-विद्या है जो कि अमृत प्रदान करने वाली है। सर्वरूप से इसी के द्वारा आत्मा का कल्याण सम्भव है तथा इसे ही अपनाया जाना चाहिए। जब तक भीतर उस क्र ांति का उद्घाटन नहीं होता जिससे ईश्वर की यथार्थ अनुभूति हो सके तब तक एकता से वंचित ही रहना पड़ेगा। सर्वप्रथम अपने संकल्प की स्मृति को दोहरा पारदर्शी चेतना का धनी होना होगा। यह हमारे सम्पूर्ण काय-कलेवर को प्रभावित करने में समर्थ है। आप इसके संग होइए, व्यर्थ की विडम्बनाओं से बचिए तथा निस्पृह जीवनयापन करिए।

जिसने भी अपने मन को सबल बना उर्ध्वगमन की ठानी है उसे सफलता निश्चित ही प्राप्त हुई है। मात्र ध्येय को समर्पित प्रत्येक कदम होना चाहिए। एक बार विशालता आ गई तो पीछे मुड़ने का कोई अवसर नहीं। इस सत्य को पहचान लेने पर ही धन्यता का वरण किया जाता है।

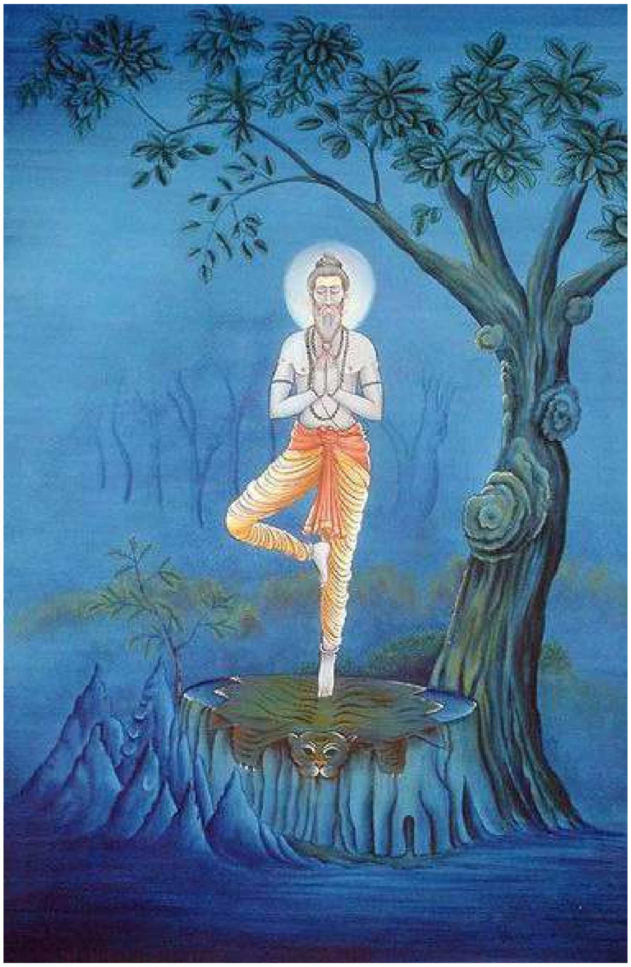

तत्परता- तन्मयता

कार्य की आवेशपूर्ण नहीं, व्यावहारिक योजना बनाने में लगाया गया मनोयोग यथार्थवादी चित्र सामने प्रस्तुत करता है। उस आधार पर ही आगे समझा जा सकता है कि किस प्रकार, कितनी अवधि तक, किन साधनों के सहारे, प्रयत्नरत रहने की आवश्यकता पड़ेगी। इतना कर चुकने के उपरान्त ही वे कदम उठते हैं, जिनसे हाथ में लिया हुआ काम शारीरिक तत्परता और मानसिक तन्मयता के सहारे आगे बढ़ाया जाता है। तत्परता का अर्थ है- स्फूर्ति और समग्र श्रम-शीलता का नियोजन। आलस्य- प्रमाद बरतने पर तो सब कुछ चौपट- ही चौपट होता चला जाता है। तन्मयता का अर्थ है- आशा, उमंग, लगन और परिपूर्ण दिलचस्पी के साथ लगाया गया मनोयोग।

इसके बिना कोई काम समग्र रूप से सधता ही नहीं। अन्यमनस्कता रहने पर तो मात्र लकीर पिटती रहती चिह्नपूजा होती रहती है। समय ढेरों लग जाता है और काम का परिमाण देखने पर वह मुट्ठी भर हाथ में आता है। जो होता है, वह भी काना, कुबड़ा, कुरूप, फूहड़ स्तर का होता है। सही और उत्साहवर्द्धक कर्तृत्व मात्र उन्हीं का होता है, जो श्रमशील तत्परता और उमंग भरी तन्मयता का अभ्यास एवं उपयोग भली प्रकार कर पाते हैं। जहाँ इस सन्दर्भ में जितनी ढील-पोल अपनाई जा रही होगी, समझना चाहिए कि उत्साहवर्द्धक सफलता प्राप्त कर सकने का दिन अभी उतनी ही दूर है। यों गुड़-गोबर तो कोई भी कुछ-न-कुछ कर ही लेता है। ''घुणाक्षर न्याय'' से भी हाथ-पाँव चलाने पर कुछ-न-कुछ औंधा-सीधा बनता रहता है ऐसा कर्तृत्व किसी स्वाभिमानी को शोभा नहीं देता। काम वे ही सराहना के योग्य बन पड़ते हैं, जिन्हें प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर पूरे मन और पूरे परिश्रम के साथ सम्पन्न किया जाता है।

ध्यानयोग का चिरस्थायी सहज-स्वाभाविक अभ्यास यही है कि सामने जो भी काम हो उसे सर्वप्रथम आदर्शों के अनुरूप होने की कसौटी पर कसकर खरा पाया जाए। इसके बाद कुछ देर उसे आरम्भ करने से लेकर समापन तक की स्पष्ट एवं व्यावहारिक रूपरेखा बनाई जाए। आवश्यकसाधन जुटाए जाएँ और परिस्थिति से ताल-मेल बैठाते हुए धैर्य, साहस और संकल्पपूर्वक निश्चित कर्म को आरम्भ कर दिया जाए। उतावली में बिना सोचे-समझे कुछ भी कर बैठने की अपेक्षा यह अधिक अच्छा है कि पक्ष-विपक्ष के सभी पहलुओं पर विचार करने के उपरान्त योजनाबद्ध कदम बढ़ाए जाएँ। बीच-बीच में आने वाले अवरोधों का ध्यान रखा जाए और उनसे निपटने के लिए आवश्यक कौशल, साहस एवं धैर्य का संचय कर लिया जाए।

समर्थता का सदुपयोग

बेल पेड़ से लिपटकर ऊँची तो उठ सकती है, पर उसे अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए आवश्यक रस भूमि के भीतर से ही प्राप्त करना होगा। पेड़ बेल को सहारा भर दे सकता है, पर उसे जीवित नहीं रख सकता। अमरबेल जैसे अपवाद उदाहरण या नियम नहीं बन सकते। व्यक्ति का गौरव या वैभव बाहर बिखरा दिखता है। उसका बड़प्पन आँकने के लिए उसके साधन एवं सहायक आधार-भूत कारण प्रतीत होते हैं। पर वस्तुतः बात ऐसी है नहीं। मानवी प्रगति के मूलभूत तत्त्व उसके अन्तराल की गहराई में ही सन्निहित रहते हैं।

परिश्रमी, व्यवहारकुशल और मिलनसार प्रकृति के व्यक्ति सम्पत्ति उपार्जन में समर्थ होते हैं। जिनमें इन गुणों का अभाव है, वे पूर्वजों की छोड़ी हुई सम्पदा की रखवाली तक नहीं कर सकते। भीतर का खोखलापन उन्हें बाहर से भी दरिद्र ही बनाये रहता है।

गरिमाशील व्यक्ति किसी देवी देवता के अनुग्रह से महान नहीं बनते। संयमशीलता, उदारता और सज्जनता से मनुष्य सुदृढ़ बनता है, पर आवश्यक यह भी है कि उस दृढ़ता का उपयोग लोकमंगल के लिए किया जाय। पूँजी का उपयोग सत्प्रयोजनों के निमित्त न किया जाय तो वह भारभूत ही होकर रह जाती है। आत्मशोधन की उपयोगिता तभी है, जब वह चन्दन की तरह अपने समीपवर्ती वातावरण में सत्प्रवृत्तियों की सुगन्ध फैला सके।

विचारों की शक्ति

विचारों की शक्ति पर अपने समय में काफी विचार हुआ है और यह माना गया है कि ध्वनि, प्रकाश और ताप की तरह चेतना क्षेत्र में विचारों की भी एक जीवन्त शक्ति है। इसकी महत्ता मानते हुए अध्ययन अध्यापन का क्रम चला है। स्वाध्याय और सत्संग की व्यवस्था हुई है। परामर्श और प्रवचन की शैली का विकास हुआ है। सही सोचने के सत्परिणाम और गलत ढंग से सोचने के दुष्परिणामों का विस्तारपूर्वक विवेचन हुआ है।

विचारों ने विचारों को काटा है और विचारों ने विचारों का समर्थन एंव पोषण किया है। एकता और विग्रह के मूल में सशक्त विचारों को ही काम करते पाया है। व्यक्तियों और समाजों को ऊँचा उठाने और नीचे गिराने में विचारों की असाधारण भूमिका रही है। पिछली शताब्दी में दो महान क्रान्तियाँ हुई हैं। एक में राजतंत्र की अनुपयुक्तता सिद्ध करके उसके स्थान पर जनतंत्र की महत्ता प्रतिपादित की है। रूसो के इस प्रतिपादन को समस्त संसार में आँधी तूफान जैसी मान्यता मिली।

इसके थोड़े ही समय उपरान्त शासन का स्वरूप साम्यवाद परक हो, इसकी वकालत कार्लमाक्स ने की और वे विचार आज आधे से अधिक जन समूह में मान्यता प्राप्त कर चुके हैं। शासन को छोड़कर समाज का स्वरूप निर्धारण करने में विचारों की प्रचण्ड लहरें अपना जादुई प्रभाव प्रस्तुत करती रही हैं। दास प्रथा का उन्मूलन, नारी को समानता के अधिकार, जन साधारण के मौलिक अधिकारों की मान्यता विचारों की प्रचण्ड लहरों के फलस्वरूप ही सम्भव हो सकी। कारखानों में मजदूरों के अधिकारों की मान्यता जैसे परिवर्तन इन्हीं दिनों व्यवहार में आये हैं।

नर-नारी की समानता, जमींदारी उन्मूलन जैसे कार्यों के लिए कोई बड़े संघर्ष नहीं हुए, विचारों के तीव्र प्रवाह ने ही इन्हें सहज सम्भव कर दिखाया। सहकारी, आन्दोलन की स्थापना और प्रगति ने जमींदारी, साहूकारी प्रथाओं को उखाड़ फेंका। छूत-अछूत का भेदभाव समाप्त होना प्रगतिशील विचारों का ही प्रतिफल है।

जीवन की वास्तविक धरोहर : विद्या

जिसने भी अपने भीतर प्रवेश कर अनमोल रत्न प्राप्त करने का प्रयास किया है उसे विद्या का महत्व ज्ञात होगा। विद्या वह शक्ति है जो मनुष्य को उसके दिव्य वैभव की ओर ले चले। इसके द्वारा चित्त के विकार दूर होते हैं तथा हम स्वयं को नए ही रूप में परिलक्षित होता पाते हैं। हमारी समस्त कठिनाइयाँ दूर होती हैं तथा हमारा जीवन अपने उत्कर्ष की दिशा में बढ़ चलता है। विद्या वह अमृत है जिसके पान से मनुष्य का अंतःकरण पूर्ण प्रकाशित होता है तथा उसे किसी चीज की कमी नहीं रह जाती। हमारे विचार-व्यवहार एकरूप हो जाते हैं तथा यह संसार व्यर्थ की बातों को हम पर आरोपित नहीं करता। हममें ऐसी प्रतिभा का जन्म होता है जो कि पारदर्शी दृष्टिकोण प्रदान करे, जिससे कोई भी कष्ट न रह जाए तथा जो अपने भाग्योदय हेतु हमें प्रेरित करे। उसी से मनुष्यता का कल्याण सम्भव है तथा एक बार यदि हम उसे समझ लें तो जीवन बहुत सरल हो जाता है। आप स्वयं में निश्चिन्त बनिए कभी भी अपनी प्रेरणा के विरुद्ध कार्य न करिए तथा अपने संकल्प को महानता की दिशा में लगाइए। यदि हम ऐसा कर लेते हैं तो कोई भी पीड़ा-अवरोध हमें अपने पथ से विमुख न कर पाएगा। विद्या हमारी इसमें सहायता करती है। उसी के द्वारा सभी कषाय-कलमष दूर होते हैं तथा मनुष्य का चिन्तन उसे नव-ऊँचाई प्रदान करता है। इसके लिए कुछ भी किया जाए परन्तु महत्वपूर्ण है हृदय का उस प्रकाश के स्रोत से जुड़ पाना जिसके बाद मनुष्य की यात्रा अपने दैवीय सौभाग्य को प्राप्त करती है।

जब तक हम विद्या को ग्रहण नहीं करते तब तक किसी भी प्रकार की उन्नति सम्भव नहीं। विद्या वह दर्शन है जो आत्मा को जगाए, उसे कुण्ठित न रहने दे तथा उसकी सोयी सम्भावना को उजागर करे। आप पहले विद्यावान बनिए, तदुपरान्त श्रेष्ठ कर्तव्य की पूर्ति में संलग्न होइए। विद्या ही सारथी है तथा जिसके पास विद्या है वह महाबलवान। आप इसके महत्व से परिचित हो जाएंगे तो कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखेंगे। इसे ही अपना सहचर बना जीवन चमत्कृत हो उठता है।

कौन होते हैं विद्या के अधिकारी

इस जीवन में प्राप्त करने को बहुत कुछ है परन्तु विद्या जैसा स्थान किसी का भी नहीं। ऐसा इसलिए क्योंकि जिस स्रोत से यह उद्भूत होती है वह अत्यन्त ही महान है। विद्या वह अमृत है जिससे समस्त पाप-ताप नष्ट हो सकें तथा जो हमें अपने यथार्थ पथ पर बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करे। जिसके पास विद्या है वही वास्तविक धनी है इसके बिना जीवन रूपान्तरित नहीं हो पाता है तथा एक बार यदि किसी ने इसका अवलम्बन ग्रहण कर लिया तो उसकी सभी शंकाएँ समाप्त हो जाती हैं। विद्या के ही प्रभाव से मनुष्य की आत्मा चमत्कृत हो उठती है, वह अपने अद्भुत विधान अनुसार जीवन के कायाकल्प की ओर अग्रसर होता है। यदि इसे छोड़ दिया जाए तो कोई भी प्रयोजन अपनी सार्थकता को प्राप्त नहीं कर सकता है। इसमें वह गुण-कौशल विद्यमान है जो सोये अंतःकरण को जगाए, अपनी गरिमा अनुरूप विचरण की सामर्थ्य प्रदान करे तथा वह करने को प्रेरित करे जिससे हमारा यह जीवन उत्कर्ष की प्राप्ति कर सके। हम धन्य होंगे यदि विद्या का वरण कर सकें, परन्तु इसका अधिकारी बनना सरल नहीं है। सर्वप्रथम अपनी पात्रता की परीक्षा देनी पड़ती है, चाल-चलन को एकत्व का संगी तथा ऊर्ध्वर्वमुखी दिशाक्रम का पालन करना होता है। ऐसा होने पर ही विद्या अपने सम्पूर्ण रूप में प्रकट हो पाएगी तथा उसे मनुष्य के विकास में अपनी भूमिका निभाने में कोई कठिनाई नहीं रह जाएगी। हमने विद्या को दरकिनार कर दिया, वह हमारे लिए महत्त्वपूर्ण नहीं हो पायी तथा उसके द्वारा जिस सौभाग्य के दर्शन हो सकते थे उससे हम वंचित रह गए। विद्या को हमारी सभी गतिविधियों का आधार होना चाहिए था परन्तु हमारे लिए यह कल्पनालोक की उड़ान भर रह गई।

जिस दिन हम इसकी गौरव-गरिमा से परिचित हो जाएँगे तथा अपने आत्मानुसन्धान द्वारा इसे उजागर करने हेतु तत्पर रहेंगे वही हमारे लिए नव-जाग्रति का प्रतिचिन्ह होगा। मनुष्य को चाहिए कि वह हर प्रकार के बन्धनों से परे इसे स्वीकार करे तथा अपने चरित्र के गठन में संलग्न हो इसकी अलौकिक आभा को प्रस्तुत करे। जो इसका हो गया उसे अब इस संसार में भटकने की आवश्यकता नहीं, विद्या ही हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सहायक होगी तथा इससे कल्याण का प्रसार होकर रहेगा।

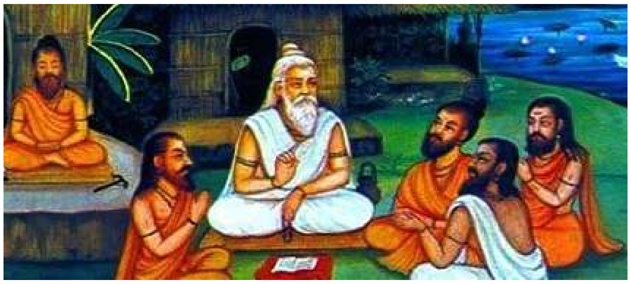

मनुष्य की वास्तविक कठिनाई - बहिर्मुखता

जो यह समझ ले कि हमारे अंतःकरण में वह महान ज्योति है जो सभी क्लेशों-विकारों को, भीतर की दुर्बलता को समाप्त करने में सक्षम है। वह आत्म-ज्योति हर प्रकार की समस्या का समाधान एवं जीवन के केन्द्रीय विकास का आधार है। उसे ही उद्घाटित करने मनुष्य जन्म लेता है एवं अंततः उसी में विलीन हो, महान सौभाग्य की प्राप्ति करता है। वही दिव्य-धारा हमारे अंतःकरण को शुभ संस्कारों से ओत-प्रोत किए हुए है, उसी का प्रकाश मनुष्य की गतिविधियों में, उसके सभी प्रयोजनों एवं उपक्रमों में दिखाई देता है। उसे ही अंगीकार करने हेतु प्रत्येक मनुष्य के कदम बढ़ने चाहिए एवं वही हमें पार लगाने में समर्थ है। ऐसी महान धरोहर को ही योगीजन स्वीकारा करते हैं एवं उन्हें कभी भी कष्ट-कठिनाई अपने मार्ग से विचलित नहीं कर पाती, इसे ही भीतर का जागरण एवं तदरूप बाह्य का परिवर्तन कहेंगे। जो इसे कर लेगा, उसका जीवन महान एवं हर प्रकार से संवरने योग्य हो जाएगा। उसे इस बात की चिन्ता ही न करनी पड़ेगी कि उसका आदर्श किसी प्रकार निभ रहा है कि नहीं, उसका जीवन परमात्मा की दिव्य आस एवं उसे अपने कार्य-व्यवहार में लागू करने की दिशा में बढ़ने लगेगा। इसे ही आत्मपरिवर्तन या चरित्र की महान साधना कहेंगे।

आप इसे कर सकें इसके लिए अपने को पूर्णतः अन्तर्मुखी बनाएँ, अपने कषाय-कलमशों को प्रगति के मार्ग पर बाधा न बनने दें, उनसे सीखें एवं तदुपरान्त आगे बढ़ने की ठानें। जो ऐसा कर लेगा, उसे किसी भी प्रकार की हानि का सामना नहीं करना पड़ेगा, अंतःकरण की महान क्षमता स्वयं ही प्रादुर्भूत होकर उसके चिन्तन-चरित्र को सँवारने लगेगी। यही वस्तुतः अध्यात्मिक उन्नति का मार्ग है, इसके लिए तटस्थ हो जाइए अपने भीतर किसी भी विकार को प्रवेश न करने दें, व्यक्तित्व की गुण-गरिमा इसी में है कि आप उसे कठिनाइयों के मध्य कितना सुस्थिर रख पाए, जगत के प्रवाह कितना कम आपको विचलित कर पाए एवं आप अपनी आत्मा के महान सौभाग्य अनुरूप अपनी कार्यविधि का निर्णयन कर सके। यही अन्तरात्मा की दिव्य पुकार को चरितार्थ करने का मार्ग है, स्वयं को जागरूक कर जगत के कल्याण की दिशा में बढ़ने का प्रयत्न है। क्योंकि आत्म-कल्याण और इस पूरी समष्टि का हित एक ही है, वह है स्वयं का उत्सर्ग।

साहस ही हमें विजयी बनाता है

इस संसार का सबसे अनमोल रत्न है- हृदय की तीव्र उत्कण्ठा। जब कभी किसी को भ्रम, संदेह एवं आत्मविश्वास की कमी दिखे तो उसे एकमात्र हृदय में विराजित ईश्वर का चिन्तन कर लेना चाहिए तथा यह स्मरण रखना चाहिए कि वह ईश्वर हमसे चाहता क्या है। उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए ही हमें यह मानव जीवन मिला हुआ है। जैसे ही हम ईश्वर से विलग हुए हमारा पतन शुरू हो जाता है। उसे अपने भीतर धारण करने की अनमोल कुञ्जी है- साहस। साहस वह दृष्टिकोण है जो हमें कभी झुकने न दे, बिना इसके जीवन साकार नहीं हो पाता है तथा यही मनुष्य को उसके उद्देश्य की पूर्ति में सहायक है। जिसके पास साहसरूपी सम्पदा है वह कभी जीवन में परास्त नहीं हो सकता है, हमारे भीतर की सारी कमी, निराशा एवं दुर्बलता का एकमात्र कारण है कि हम स्वयं के साहस से पदच्युत हो गए। उसे बनाए रखते तो कभी भी स्वयं को दुःख-दुविधाग्रस्त नहीं पाते। साहस के द्वारा ही मनुष्य अपनी कठिनाइयों पर विजय तथा इस संसार में ईश्वर का पुत्र कहलाने के योग्य बनता है। हम साहस के धनी बनें, उसे ही अपनी जीवन-नीति बना आगे बढ़ने की ठाने। जब तक हमारे पास साहस है हमारे कदमों को कोई रोक नहीं सकता है।

मनुष्य जीवन का यह सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि हम साहस के महत्व को भूल गए। जिस चीज की हमें सबसे अधिक आवश्यकता है वह साहस ही है। इसके बिना जीवन-लक्ष्य की पूर्ति सम्भव नहीं। ईश्वर हमसे चाहते हैं कि हम साहसी बने, उसे ही अपने अंतःकरण में धारण कर आगे बढ़ें। जब तक ईश्वर हमारे साथ है हमें किसी चीज की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं, उसके द्वारा ही सभी प्रकार के कषाय-कलमशों से मुक्ति तथा मनुष्य के भाग्योदय का पथ प्रशस्त होता है। ऐसा तभी सम्भव है जब हमारे भीतर साहस का गुण विद्यमान हो क्योंकि वही हमें अपने पथ की कठिनाइयों से उबारने में सक्षम है, उसी के द्वारा मनुष्य अपने दिव्य वैभव की प्राप्ति करता है एवं तब उसका जीवन सुख-शान्ति की दिशा में बढ़ चलता है। हमें साहस का धनी होना चाहिए, उसे ही अपने भीतर धारण कर उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। ईश्वर की दिव्य कृपा तभी हमारे साथ होगी जब हम साहस को अपना अपने जीवन को उन्नत बनाने की दिशा में बढ़ें। जिसके पास साहस है वह कभी भी परिस्थितियों का गुलाम नहीं बन सकता है उसकी आत्मा कहेगी कि तुझे सदा मेरे अनुकूल बरतना है। जब तक साहस की कमी नहीं होती मनुष्य हर प्रकार की पीड़ा-कठिनाई के पार स्वयं को देख पाता है, उसका जीवन ईश्वर की दैवीय आकाँक्षा से परिपूर्ण होता है।

सुख और कठिनाइयाँ- दोनों की उपयोगिता

सुखों की अपनी उपयोगिता है, साधन-सम्पन्नता के सहारे प्रगति क्रम में सुविधा होती है- यह सर्वविदित है, पर यह भी सत्य है कि कठिनाइयों की आग में पककर खरा और सुदृढ़ बना जाता है। सोने को अग्नि परीक्षा में और हीरे को खराद पर चढ़ने में कठिनाई का सामना तो करना पड़ता है पर उसका मूल्यांकन, उससे कम में हो भी तो नहीं सकता। कठिनाइयों के कारण मनुष्य में धैर्य, साहस, कौशल, पराक्रम जैसे कितने ही सद्गुण विकसित होते हैं, जागरूकता बढ़ती है और बहुमूल्य अनुभव एकत्रित होते हैं। अभाव और संकटों में दुर्बल मनःस्थिति के लोग तो टूट जाते हैं, पर जिनमें जीवन है वे चौगुनी, सौगुनी शक्ति के साथ उभरते देखे गए हैं। सम्पन्नता की अपनी उपयोगिता है और विपन्नता का अपना महत्त्व है। यदि दोनों का समुचित लाभ उठाया जा सके, तो यह उभयपक्षीय अनुदान प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिए अपने-अपने ढंग से सहायता करते दिखाई पडेगा।

नमक और मीठा परस्पर विरोधी है तो भी उनसे स्वाद संतुलन बनता है। ताने और बानों के धागे एक-दूसरे से विपरीत दिशा में चलते हैं, पर उनका गुँथन उपयोगी वस्त्र बनकर सामने आता है। रात्रि और दिन की स्थिति में भिन्नता ही नहीं विपरीतता भी है पर उनके समन्वय से ही समय-चक्र घूमता है। विपरीतताओं का समन्वय ही संसार है। जीवन श्रृंखला इन विचित्रताओं की कड़ियों से मिलकर बनी है। हमें दोनों की उपयोगिता समझनी चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ कलाकारिता

कलाकार के हाथ अनगढ़ वस्तुओं को पकड़ते हैं और अपने उपकरणों के सहारे उन्हें नयनाभिराम सुन्दरता से भरते और बहुमूल्य बनाते हैं। कुम्हार मिट्टी से सुन्दर खिलौने बनाते है - मूर्तिकार पत्थर के टुकड़े को देव-प्रतिमा में परिणत करता है। गायक बाँस के टुकड़े से बंशी की ध्वनि निनादित करता हैं। धातु का टुकड़ा स्वर्णकार के हथौड़े की चोट खाकर आकर्षक आभूषण बनता है। कागज, रंग और कलम से बहुमूल्य चित्र बनाने का चित्रकार का कर्तृत्व कितना चमत्कार उत्पन्न करता है, इसे कोई भी देख सकता है। जीवन एक अनगढ़ तत्त्व है। इसे दयनीय दुर्गति से ग्रसित स्थिति में ही अधिकांश व्यक्ति किसी प्रकार गुजारते हैं। उससे लाभ और आनन्द उठाना तो दूर उलटे भार की तरह ढोने में ही कमर टूटती और गरदन मुड़ती दिखाई देती है।

क्या वस्तुतः जीवन ऐसा ही है जिसे रोते-खीजते किसी प्रकार पूरा किया जाना है? इसके उत्तर में इतना ही कहा जा सकता है कि अनाड़ी हाथों में पड़ कर हीरा भी उपेक्षित होता है तो बहुमूल्य मनुष्य जीवन भी क्यों न भार बनकर लदा रहेगा। किन्तु यह भी स्पष्ट है कि यदि उसे कलाकार की प्रतिभा से सँभाला, सँजोया जाय तो निश्चय ही उसे देवोपम स्तर का स्वर्गीय परिस्थितियों से भरा-पूरा जिया जा सकता है। साधना जीवन जीने की कला का नाम है। जो मानवी अस्तित्व की गरिमा समझ सका और उसे अनगढ़ स्थिति से निकाल कर सुसंस्कृत पद्धति से जी सका उसे सर्वोपरि कलाकार कह सकते हैं।

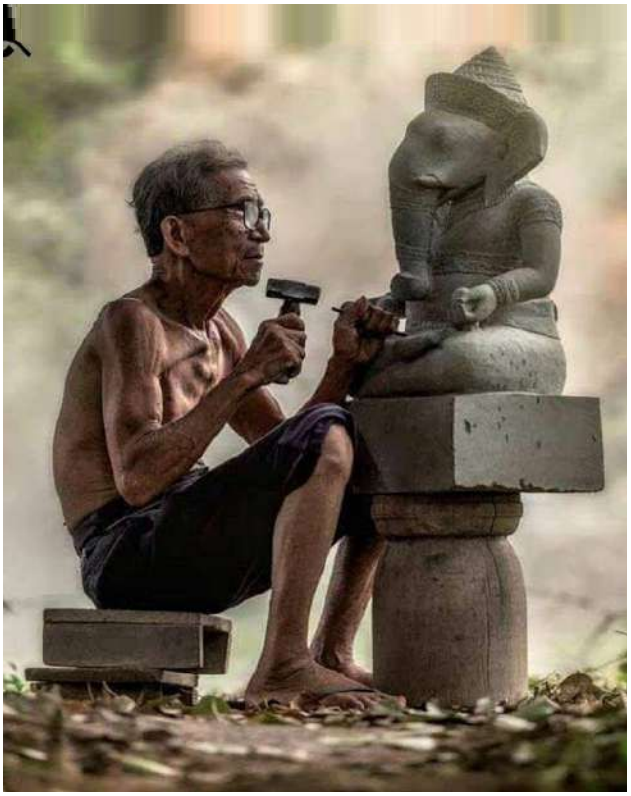

स्वाभाविक धर्म

धर्म का अर्थ स्वभाव है। स्वभाव मनुष्यकृत नहीं होता, वरन ईश्वर प्रदत्त होता है। जिस योनि में जैसी शिक्षा प्राप्त करनी होती है, उसकी मर्यादा चारों ओर से खिंची हुई होती है, जिससे नौसिखिए कुछ भूल न कर बैठें। स्कूल के छात्र खेल के घण्टों में जब गेंद खेलते हैं, तो अध्यापक उन्हें एक मर्यादित क्षेत्र बता देता है कि इस भूमि में खेलो। वैसे तो अपनी बुद्धि के अनुसार खेलने, हारने, जीतने में खिलाड़ी स्वतंत्र हैं, अध्यापक उसमें हस्तक्षेप नहीं करता, पर क्षेत्र जरूर मर्यादित कर देता है। फील्ड छोड़कर सड़क पर फुटबाल उछालने की वहाँ व्यवस्था नहीं है। इसी प्रकार मनुष्य की कुछ स्वाभाविक मर्यादाएँ हैं, जिसके अन्दर वह भले-बुरे खेल खेलता है। यही स्वाभाविक मर्यादाएँ दार्शनिक दृष्टि से धर्म कहलाती हैं।

धर्म के अन्तर्गत क्षेत्र में ही मनुष्य के सारे काम होते हैं, इसमें पाप-पुण्य क्या है? और किस प्रकार है? यह सोचनीय तथ्य है। इस समय तो मूलभूत धर्म के बारे में ईश्वर दत्त स्वाभाविक मर्यादा के सम्बन्ध में चर्चा की जा रही है, जिसे जानकर यह निश्चय किया जा सके कि हमें यह मानव देह क्या शिक्षा प्राप्त करने के लिए मिली है।

मनुष्य क्या करने में लगा रहता है, इसका गहरा निरीक्षण करके आध्यात्मिक तत्ववेत्ताओं ने यह निष्कर्ष निकाला है कि ''सच्चिदानन्द'' की उपासना में मानव प्राणी हर घड़ी लगा रहता है, एक पल के लिए भी इसे नहीं छोड़ता और न इसके अतिरिक्त और कुछ काम करता है। पाठक अधीर न हों कि सच्चिदानन्द की उपासना तो विरले ही करते हैं, यदि विरले ही करते तो वह बात स्वाभाविक धर्म न रह जाती, फिर उसे मनुष्यकृत मानना पड़ता है।

उपासना का प्रमुख आधार- श्रद्धा

आस्तिक समुदाय में अपने-अपने स्तर की उपासनाओं का विधान और प्रचलन है। परम्परावादी उन्हें सम्पर्क-क्षेत्र के वातावरण से अपना लेते हैं, किन्तु विचारशीलों के सामने एक कठिनाई यह आती है कि अनेकानेक प्रचलनों में से किसे अपनाएँ, किसे न अपनाएँ। इस असमंजस को दूर करने के लिए उन्हें तर्क, तथ्य और प्रमाण की कसौटी लगानी पड़ती है और जानना पड़ता है कि अनेकानेक प्रचलनों में से समाधान- कारक क्या है? किसे छोड़ा और किसे अपनाया जाए?

यों उपासना का प्रमुख आधार श्रद्धा है। श्रद्धा के साथ आत्मक्षेत्र की विशिष्टताएँ व विभूतियाँ जुड़ती हैं। अश्रद्धा रहने पर कोई भी पूजा-पाठ, विधि-विधान व जप-तप एक खिलवाड़ बनकर रह जाता है। कौतुक कुतूहल की तरह कई व्यक्ति उपासना-साधना करते तो हैं, पर उनको कोई कहने लायक परिणाम न मिलने पर और भी अधिक अश्रद्धालु बन जाते हैं। यहाँ भूल विधि-विधान के किसी भी क्रम में नहीं खोजी जानी चाहिए, वरन् देखा यह जाना चाहिए कि उस प्रयोग में श्रद्धा का समावेश कितना रहा। श्रद्धालु को देव प्रतिमाएँ रामकृष्ण परमहंस की तरह, मीरा की तरह, एकलव्य की तरह शक्ति और यथार्थता की प्रतिमाएँ परिलक्षित होती हैं; जबकि अश्रद्धालु प्रतिमाओं का उपहास उड़ाते रहते हैं। मूर्तिकारों के लिए देव प्रतिमाएँ विक्रयार्थ रखी गई वस्तुमात्र होती हैं; जबकि भावनाशील उनके सहारे अपनी श्रद्धा को परिपक्व और भाव-संवेदनाओं की परिष्कृत करते हैं। यहाँ श्रद्धा-विश्वास की शक्ति ही प्रधान रूप से काम करती है। उसके अभाव में साधनाएँ एक प्रकार की चिह्नपूजा भर बनकर रह जाती हैं। इतने पर भी मनुष्य विवेकशील होने के नाते पूजा-पद्धतियों में से विशिष्टता की खोज-बीन करे और उनमें से अधिक प्रभावी को चुनने का प्रयत्न करे तो इसमें कुछ आश्चर्य की बात नहीं है।

भाव संवेदना

मनुष्य में शारीरिक संरचना और बुद्धिकौशल भी बढ़ा-चढ़ा है पर उसकी सर्वोपरि विशेषता जो अन्यान्य जीवों के पास नहीं है, मात्र उसकी ही विभूति है- भाव संवेदना। अपना सुख बाँट देने और दूसरों का दुख बँटा लेने की प्रवृत्ति। सघन सहकारिता और उदार सेवा साधना मात्र उसी के हिस्से में आई है, इसी कारण उसे ईश्वर का युवराज कहा जाता है। सृष्टि का मुकुटमणि भी। बलिष्ठता और कुशलता की दृष्टि से अन्य जीव भी अपने अपने स्तर की विशेषताएँ धारण किये हुए हैं। हवेल और हाथी जैसे विशालकाय, चीते जैसे धावक, गेंड़े जैसे सुदृढ़, बया और मकड़ी जैसे शिल्पी, कुत्ते जैसे घ्राण विकसित एवं अनेक स्तर की अतीन्द्रिय क्षमताओं से सम्पन्न अनेक प्राणी पाये जाते है, मनुष्य उनसे पीछे है। न वह आकाश में पक्षियों की तरह उड़ सकता है और न पानी की गहराई में मछली की तरह निर्बाध रूप से रह सकता है। साँप जैसे बिना हाथ पैरों के सरपट दौड़ लगाना भी उसके वश में नहीं है। उतने पर भी उसने सहकारिता के आधारपर न केवल परिवार की, समाज की, शासन की व्यवस्था की है, वरन् विज्ञान, व्यवसाय, उत्पादन, कला कौशल के अनेक क्षेत्र भी विकसित किये हैं। यह सब तभी सम्भव हो सका, जब उसमें आत्मीयता की सद्भावना उभरी और उसी के सहारे सहकार, अनुदान का बहुविधि उत्कर्ष बन पड़ा। आदर्शों की स्थापना, उदात्त लोकमंगल के निमित्त बढ़ी-चढ़ी योजना बनाने में भी उसकी भाव संवेदना ही सहायक हुई।

वैयक्तिक जीवन में यदि किसी को आनन्द भरी उमंगों से अनुप्राणित देखा जाय तो समझना चाहिए कि उसके अन्तःकरण में भाव तरंगों की निर्झरिणी उमँगी है। इसी के कारण उल्लास का उद्भव होता है और व्यक्ति उन कामों को करने के लिए उद्यत होता है जिन्हें मानवी गरिमा के अनुरूप कहा जाता है, जिनमें उत्कृष्ट आदर्शवादिता का असाधारण समावेश पाया जाता है।

जागरूकता का पुण्य-पथ

ज्ञान से सुशोभित आत्मा इस संसार में क्या करना चाहेगी। उसे किस बात की चिन्ता हो? क्या उसके क्रियाकलाप का आधार बने? यह प्रश्न अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। अध्यात्म हमें नव-ऊँचाई प्रदान करता है परन्तु साथ ही अपनी पात्रता की परीक्षा भी अपेक्षित है। जिसने भी इस दिशा में कदम बढ़ाया है वह धन्य हुए बिना नहीं रहा। सच में महान रस मिलता है अपनी दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करने में। जब निरन्तर ऐसा होने लगे तो उसे ही साधना कहते हैं। जीव को हतोत्साहित करने के पर्याप्त कारण हैं, उसकी यात्रा भी कोई छोटी नहीं। कहाँ जाना है और कहाँ पहुंचे हुए हैं? एक बार विचार कर लें तो फिर अड़चन नहीं रह जाती। सर्वप्रथम बोध होना चाहिए कि हमारी सत्ता सीमित है तथा असीम से जुड़ने की लगन निरंतर बनी रहती है। यदि भीतर के अज्ञान को दूर कर दिया जाए तो ही उन्नति का पथ प्रशस्त होता है। क्योंकि अधिकांश मनुष्य सत्य से अनभिज्ञ बने होते हैं तथा उन्हें लगता है कि व्यर्थ की कल्पना कर क्या मिलेगा। इसीलिए उद्धर्वगमन का प्रयास सम्भव नहीं हो पाता। पूर्णतः निःस्पृह हो एकत्व का वरण किया जाए तो संसार स्वतः ही माध्यम बन जाएगा देवत्व की चढ़ाई का।

समस्त कष्ट-तापों को सहते हुए आप लक्ष्य-बिन्दु से सक्रिय हों। उत्सर्ग की ज्योति जलनी चाहिए, प्रेम का प्रकाश उद्दीप्त हो, कल्याण के स्वर उमग पड़ें। इसी निमित्त धरती पर आगमन हुआ है तथा बिना संघर्ष किए व्यर्थता का ही अनुभव करना पड़ेगा। ईश्वर ही नियंता है जो कि कभी साथ नहीं छोड़ता उससे प्रेरित जीवन बन जाए तो इससे बड़ी उपलब्धि नहीं। क्षण दर क्षण आत्म-विगलन हो, क्षुद्रता रहने न पाए तथा दैवीय अभियान में सफलता हेतु प्रत्येक जागरूक हो सके।

दुःख से मुक्ति का एकमात्र उपाय

जितने भी दुःख हैं वे मनुष्य की अहमन्यता से जन्म लेते हैं, उनमें हमारा स्वार्थ निहित होता है। यदि हम अपने को दुख से मुक्त करना चाहते हैं तो पूर्णतः निस्वार्थ बनने का प्रयास करें, क्योंकि एक इसी से चेतना में वह जाग्रति आती है, जो कि अत्यन्त ही विलक्षण एवं महान है। दुःख इस बात से होता है कि हमें कुछ मिला नहीं, हम अधूरे रह गए, परन्तु वास्तव में यह भ्राँति है। जिसके पास ज्ञान है, वह कभी दुःख से ग्रसित नहीं हो सकता। उसकी आत्मा सदैव उसे उच्च-संस्कारों से युक्त रख उसके भीतर किसी भी प्रकार के विकार का प्रवेश नहीं होने देती। यही वास्तव में योग का पथ है, आप इसके लायक बनिए। जो ऐसा करेगा, उसे किसी प्रकार की चिन्ता या शोक नहीं करना पड़ेगा। भीतर की प्रेरणा उद्भूत होकर सभी प्रकार की विषमताओं का अन्त कर देगी। मनुष्य का स्वरूप अत्यन्त ही उज्ज्वल परिणति को प्राप्त करेगा, तब वह साधारण नहीं असाधारण गुण-गरिमा से पूर्ण हुआ अपने को परिष्कृत कर जीवन के यथार्थ-पथ पर बढ़ चलता है। यही उसकी अभियात्रा का केन्द्र-बिन्दु एवं उसे विकसित मानव बनाने हेतु कारगर है। जिसे यह बोध हो जाए कि हमारे भीतर एक महान शक्ति का निवास है एवं इसे अन्तिम परिणति देने हेतु स्वयं का आत्म-चिन्तन विकसित अवस्था को प्राप्त करना चाहिए तथा कभी भी सांसारिक शोक-विकार हमें अपने पथ की गरिमा से विचलित न कर पाएँ तथा प्रत्येक गतिविधि का सुनियोजन आत्मा के इर्द-गिर्द किया जाए, तो ही यह सम्भव है कि आत्म-चेतना अपने व्यापक विस्तार हेतु कार्यरत हो, उसे उच्च-उमंग एवं आत्मविश्वास की प्राप्ति हो सके। भीतर की जाग्रति एक अत्यन्त ही महान घटना है, इसके समतुल्य जीवन में कुछ भी नहीं। जो यह कर सका उसे इसके त्वरित परिणाम मिलते हैं, अंतर्जाग्रति हर प्रकार की समस्या एवं अवरोध को समाप्त करने में सक्षम है। इसे ही व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास एवं मन का विषयों से इतर आत्मप्रेरणा से संयुक्त हो जाना कहेंगे। हम इसे तभी कर पाएंगे, जब हमें बोध हो कि जीवन का क्या उद्देश्य है? इसका क्रियान्वयन कैसे करना है?

प्रत्येक अवस्था में जो स्वयं को साधने में सक्षम होता है, उसे ही यह योग्यता एवं सम्पदा प्राप्त होती है कि वह शक्ति को जीवन के नव-निर्माण में लगा सके। जो भी तत्व उसे सुमंगल की दिशा में प्रेरित करने में सहायक होते हैं, उन्हें वह एकत्रित कर कार्यों का निर्वहन करता है। स्वयं को जाग्रत करने का विज्ञान ही आत्मविद्या है। इसे जो पहचान ले, वे कभी दुःखी नहीं होते। अंतस की प्रकाश जीवन की गतिविधियों को नियंत्रित करने लगता है, राग-दोष, मोह-विकार समाप्त होने लगते हैं। यही जीवन का परिवर्तन है एवं दुःख से मुक्ति का एकमात्र साधन भी।

देवता का अर्थ है देने वाला

देवताओं का बहिरंग जिस रूप में प्रतिपादित किया गया है उसमे उनके धवल प्रखर एवम परिपक्व व्यक्तित्व का ही आभास मिलता है, देवता शब्द का मोटा अर्थ है देने वाला, जिसकी भावनाएँ सदा दूसरों को समुन्नत सुसंस्कृत देखने को उमंगती रहें, जिनकी गतिविधियाँ सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन में निरत रहें उन्हें देवस्वभाव का अधिष्ठाता कहा जा सकता है। सद्भाव सम्पन्न, उदार, सेवाभावी, परमार्थ परायण व्यक्ति इसी वर्ग में गिने जा सकते हैं। जिनकी आत्मिक विभूतियाँ और भौतिक सम्पत्तियाँ उत्कृष्ठता को समर्थक आदर्शवादिता में सहयोग- रत हों उन्हें देव प्रकृति का कहा जा सकता है। देवताओं के जो चित्र खींचे गए हैं, उनमें उनकी आकृति, प्रकृति का विशेषण करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि वे जन- सामान्य की अपेक्षा क्रि याशीलता, विचारणा, एवं भाव संवेदनाओं की दृष्टि से कहीं अधिक उच्चस्तरीय रहे होंगे। ऐसे लोग जहाँ भी रहेंगे वहीं सुख-शान्ति एवं प्रगति का हँसता- हँसाता, खिलता-खिलाता वातावरण प्रस्तुत करेंगे। ऐसा वातावरण ही स्वर्ग है।

इन पंक्तियों में यह निरूपित किया गया है कि मनुष्य का समग्र विकास देवता के रूप में होना चाहिए। यह उत्कर्ष की चरम सीमा है। ''देवत्व'' ही वह वैभव है जिसकी परिणति अनेकानेक ऋद्धि-सिद्धियों के रूप में परिलक्षित होती है। देवत्व को अमृत, पारस, कृल्पवृक्ष, ब्रह्मास्त्र आदि नामों से पुकारा जाता है। इन नामों में इस बात का संकेत है कि ''देवत्व'' की विभूतियों से सम्पन्न व्यक्ति किस प्रकार लोहे जैसी अनगढ़ परिस्थितियों से घिरा रहने पर भी किस तरह देवत्व का पारस छूकर बहुमूल्य सोने की तरह सम्मानास्पद हो सकता है। उसका यश शरीर अमृत पीने वालों की तरह इतिहास के पृष्ठों पर अमिट रह सकता है। लोक सम्मान एवं जन सहयोग की असीम मात्रा उपलब्ध करने के कारण वह कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर मनोकामना पूर्ण कराने वालों की तरह किस तरह प्रचुर साधन सम्पन्न हो सकता है। पवित्र और प्रखर व्यक्तित्व ही इन्द्र वज्र की कोटि में आते हैं। वे जिस भी अवाँछनीयता पर टूट पड़ते हैं, उसे निस्सार करके रख देते हैं। ये समूची फलश्रुतियाँ उत्कृष्ट व्यक्तित्वों के मूल्य एवं प्रभाव की ओर-पूर्णता के लक्ष्य बिन्दु ''देवत्व'' के स्वरूप की ओर ही इंगित कर देती हैं।

यज्ञ की प्रेरणा

यज्ञ की प्रेरणा है-दान, त्याग एवं बलिदान के लिए सहर्ष अपने को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित, सहमत करना। दूसरा आधार भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। संगतिकरण से अभिप्राय है- एकरूप कर लेना, समान बन जाना, आकृति एवं प्रकृति में एकरूपता स्थापित हो जाना। यज्ञ संगतिकरण की प्रेरणा देता है; अर्थात ईश्वर के प्रतीकस्वरूप विश्व से तादात्म्य स्थापित कर सबमें उसका दर्शन कर एकरूप हो जाना, अपनी चेतना को विश्वचेतना में विलीन कर देना।

लकड़ी अग्नि के सम्पर्क में आकर उसी का रूप ग्रहण कर लेती है, सामान्य नदी-नाले भी गंगा में मिलकर गंगाजल बन जाते हैं। ईश्वर श्रेष्ठताओं एवं दिव्यताओं से ओत-प्रोत है। उसकी संगति व्यक्तित्व में इन्हीं विशेषताओं के रूप में परिलक्षित होनी चाहिए। संगतिकरण सम्पूर्ण प्रकृति में आमूलचूल परिवर्तन कर देता है, आकृति भी बदल जाती है। विश्वचेतना विश्वमानव के साथ संगतिकरण, अंतः की उदात्तता एवं महानता के रूप में दृष्टिगोचर होता है। विश्वचेतना के साथ तादात्म्य आत्मवत् सर्वभूतेषु, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के रूप में प्रकट होता है।

सामान्यतः मनुष्य का संगतिकरण पदार्थों से होता है। फलतः पदार्थों के जड़ संस्कारों को ही वह ग्रहण करता है। भौतिक वस्तुओं की आसक्ति मृगतृष्णा के समान है, जो अतृप्ति एवं असंतोष का कारण बनती है। ऐसे में चेतना की दिव्यता, सरसता एवं मधुरता की अनुभूति नहीं हो पाती। संगतिकरण पदार्थों से होता है, फलतः शाश्वत सुख से सदा वंचित बने रहते हैं। यज्ञ अपनी सत्ता से चेतना का विश्वचेतना के साथ संगतिकरण करने की प्रेरणा देता है। अपनी सत्ता आत्मसत्ता के रूप में सभी प्राणियों में विद्यमान है। उसका परम सत्ता से, प्राणिमात्र में समायी चेतना के साथ सम्पर्क जोड़ा जा सके, एकरूपता बन सके तो विश्वचेतना की विशेषताओं एवं विभूतियों से सम्पन्न बना जा सकता है। यज्ञ उसी की प्रेरणा देता है।

मानवीय प्रतिभा का सुनियोजन

जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि अपनी प्रतिभा को सही दिशा एवं गति मिले, उसके द्वारा आत्मसन्तोष एवं आत्मगरिमायुक्त जीवनयापन की व्यवस्था बन पड़े। ऐसा तभी होगा जब व्यक्ति अपनी प्रतिभा को उच्चतर प्रयोजन की खातिर समर्पित करे, जो कि है अपनी आत्मा का विकास। इसके लिए चाहिए एक पैनी दृष्टि अपने विचारों पर, अपने क्रियाकृत्यों एवं उद्देश्यों पर। जो ऐसा कर लेगा उसका जीवन सदा प्रकाशित उसे आन्तरिक उमंगों एवं महान विकासक्रम की दिशाधारा से परिचित कराएगा। यही व्यक्तित्व की शोभा एवं गुण-गरिमा का प्रतिचिन्ह है। मानवीय मस्तिष्क अपने में अपार क्षमता रखता है अपनी शक्तियों के सुनियोजन की, उसे मात्र स्वयं को उच्च-प्रेरणा को समर्पित करना आना चाहिए। प्रतिभा वह बीज है, जो कि यदि अन्तराल में जन्म ले ले तो असाधारण रूप से फलित एवं विकसित होता चला जाता है। हमारी प्रतिभा का कारण हमारी आत्मभावना है। जब हम स्वयं को पदार्थ के जगत से प्रथक कर चेतना में सुस्थित करते हैं, स्वयं को अधिक जागरूक कर जीवन का कल्याण-पथ देखते हैं तभी यह घटित होता है कि जीवन अपने विषयों से विलग हुआ परम संतोष की प्राप्ति करता है, एवं आत्म-निग्रह की प्रक्रिया द्वारा अपनी दिशाधारा में दैवीय प्रेरणा एवं उमंग का संचार करता है। यही प्रतिभा का उत्सर्जन है।

जो अपनी प्रतिभा को पहचान उसे लोकमंगल का दृष्टिकोण प्रदान कर देते हैं, सच में वे ही धन्य हैं। अन्यथा तो प्रतिभा व्यर्थ के क्रियाकलापों एवं असंगत नीति-व्यवहारों में ही जा रमती है। उसे महानता का पथ-द्वार नहीं मिलता एवं वह किसी प्रकार अपने निर्वहन को ही लोलुप-लाचार बनी रहती है। प्रतिभा को कुशल नेतृत्व मिल सके इसके लिए अपने अन्तर्मन को सशक्त करना पड़ता है, उसमें दैवीय बीज एवं गुण-कर्म-स्वभाव के परिष्कार का उद्भव लाना पड़ता है। तभी प्रतिभा सोद्देश्य बनकर अपनी गौरव-गरिमा का परिचय देती है। मनुष्य का विकास इस एक ही पहलू पर आधारित है कि उसने अपनी प्रतिभा को कितना महान अवलंबन दिया, उसके द्वारा स्वयं का उद्धार एवं जगत का कल्याण करने में समर्थ हो सके। प्रतिभा अंततः स्वयं के जागरण का ही विषय है।

हम अपनी पात्रता बढ़ाएँ

अध्यात्म पथ पर जो सबसे महत्वपूर्ण पहलू देखा जाता है वह पात्रता का ही है। साधक जब इसे अधिकाधिक बढ़ाता जाता है तो उसे यह अनुभव होता है कि ईश्वर सतत साथ रह उसके विकास में भूमिका निभा रहा है। पात्रता सच में बहुत बड़ी चीज है जिसने भी इस पर कार्य किया है वह धन्य हुए बिना नहीं रहा। उसके सभी कष्ट-विकार मिट गए तथा वह नए ही रूप में स्वयं को पाता है। जिस क्षण हम यह बोध कर लेते हैं कि जीवन अल्प है तथा उसे महानता के लक्ष्य-बिन्दु से ही कार्यरत होना चाहिए वही हमारे लिए जाग्रति का प्रतिचिन्ह होता है। पात्रता का अर्थ है देवत्व के प्रयोजन के लिए अपनी क्षमताओं, प्रतिभाओं और योग्यताओं को बढ़ाते जाना। जो यह कर सका उसे ही असीम से जुड़ने का अवसर मिलता है तथा फिर वह साधारण प्राणी नहीं रह जाता। हमारी आत्मा कहती है कि तुम ऊँचे उठे, क्यों क्षुद्रता को ओढ़े बैठे हो, अपनी सभी कमियों को त्याग नव-जीवन का वरण करो। जिसने भी इस पथ पर बढ़ने की ठानी है उसे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि एक अदृश्य शक्तिधारा उसके संग हो जाती है। वह सदा एकनिष्ठ अपनी अस्मिता को बनाए रखता है तथा कभी भी इस संसार के मतभावों से आच्छादित नहीं होता। यही उसकी पहचान है तथा इसी के इर्द-गिर्द उसके क्रियाकलाप चला करते हैं।

अपने दिव्य वैभव को उजागर करने हेतु हमें नव-विधान की आवश्यकता है। यदि हम पूर्ण जागरुक हो सके तो ही यह सम्भव है कि हमारा पुरुषार्थ इस हेतु लग पड़े तथा कोई भी अवरोध हमें अपनी उज्ज्वल सम्भावना से विमुख न कर सके। इसी में कल्याण है तथा निज धर्म का पालन भी।

समृद्धि के साथ सदाशयता का बढ़ना आवश्यक

मनुष्य की योग्यता, बुद्धिमत्ता, क्षमता, समर्थता एवं सम्पन्नता में अभिवृद्धि होनी चाहिए। भौतिक प्रगति की इस आवश्यकता से कोई इनकार नहीं कर सकता, किन्तु यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि प्रगति एकांगी न हो, उसके साथ सज्जनता, शालीनता एवं उदार परमार्थ परायणता जैसे तत्त्वों को भी जुड़ा रहना चाहिए। भौतिक और आत्मिक प्रगति का संतुलन एवं समन्वय ही श्रेयस्कर हो सकता है। खाली बोरा सीधा खड़ा नहीं रहता और भूखा भेड़ियाई पर उतारू होता है, यह सही है। ''बुभुक्षितं किन्नकरोति पापम्'' की उक्ति झुठलाई नहीं जा सकती। अस्तु आर्थिक, बौद्धिक एवं अन्यान्य प्रकार की सम्पन्नताएँ उपार्जित करने के लिए भरपूर प्रयत्न होना चाहिए, किन्तु ध्यान रखने योग्य बात यह भी है कि एकांगी प्रगति असंतुलन उत्पन्न करती है और उसमें लाभ के स्थान पर हानि होती है। सम्पत्ति बढ़े, किन्तु शालीनता गये-गुजरे स्तर की ही बनी रहे तो उस वैभव का अनुपयुक्त उपयोग होगा। फलतः प्रत्यक्षतः दीखने वाली सम्पत्ति परोक्ष रूप से विपत्ति का सृजन करेगी।

गाड़ी का एक पहिया ऊँचा, दूसरा नीचा हो। एक पैर पतला, दूसरा मोटा हो। एक हाथ लम्बा, दूसरा छोटा हो तो और कार्यक्षमता में भी गड़बड़ी पड़ेगी। दोनों में समता रहनी चाहिए। समृद्धि के साथ सदाशयता का बढ़ना आवश्यक है। सुख को मिल-बाँटकर खाया जाए, तभी वह हजम होगा। एकाकी उपार्जन में हर्ज नहीं, पर उसके उपयोग में उन्हें भी सम्मिलित करना चाहिए, जो अपने बलबूते सम्मानित मानव कहलाने की स्थिति में कारणवश पहुँच नहीं सके हैं। अपनी कमाई आप ही खा जाने से हानिकारक अपच उत्पन्न होता है।

जीवात्मा का ध्येय है- अनन्त आनन्द की प्राप्ति

जीवात्मा का ध्येय है- अनन्त आनन्द की प्राप्ति। ''मृत्योर्मा अमृतम् गमय'' में इसी अमरता की माँग है। नदियाँ अपने आप में संतुष्ट न होने से समुद्र की ओर दौड़ी चली जाती हैं। हवा को एक स्थान पर चैन नहीं। यह प्रतिक्रिया संसार के प्रत्येक परमाणु में चल रही है। किसी को भी अपने आप में संतोष नहीं मिलता। जड़ व चेतन सभी पूर्णता के लिऐ गतिवान हैं। अपने स्वत्व को किसी महान सत्ता में घुला देने के लिए सबके सब सतत क्रियाशील दिखाई देते हैं।

ऐसी ही प्रक्रिया जीवात्मा की है। व्यष्टि में उसे अनन्त आनन्द की प्राप्ति नहीं। समष्टि की परमात्मा के पावन स्पर्श हेतु सेवा-भक्ति अनिवार्य है। आत्मचिन्तन की प्रवृत्ति से जीवन-मरण के रहस्य का अनावरण होता है। उसे यह आभास मिलता है कि मानव को यहाँ वे सारी परिस्थितियाँ प्राप्त हैं, जिनके सहारे सक्रिय होने पर वह अपनी विकास-यात्रा आसानी से पूरी कर सकता है।

परमात्मा से प्रेम एवं आत्मीयता स्थापित करने का अच्छा तरीका यह है कि हम उसका अभ्यास परिजनों से प्रारम्भ करें। संसार में सबके साथ सत्य का व्यवहार करें, न्याय रखें और सहिष्णुता बरतें। स्वार्थ की अहंवृत्ति का परित्याग कर परमार्थ के विशाल क्षेत्र में पदार्पण करें। इससे मनुष्य विराट की ओर अग्रसर होता है। यही नया दृष्टिकोण युग की अनिवार्य आवश्यकता है।

ऐसे धार्मिक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति हजारों-लाखों योनियों के बाद सौभाग्य से उपलब्ध मानव जीवन को तुच्छ स्वार्थमय गोरख- धंधों में ही दुरुपयोग करने की मूर्खता नहीं करेगा। यह प्रत्यक्ष है। कि पशु-पक्षी की तुलना में ज्ञान या धर्म भावना के कारण ही वह श्रेष्ठ है।

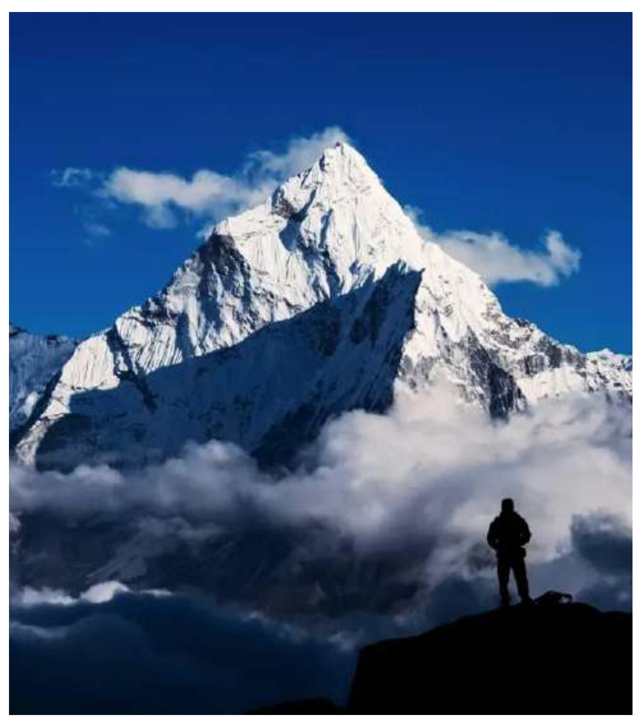

There is need for an educational institution which could mould its students into noble and enlightened human beings: selfless, warm-hearted, compassionate and kind.

-Acharya Pt. Shriram Sharma

Patron & Chief Editor :
Dr. PRANAV PANDYA

Associate Editor :
Dr. CHINMAY PANDYA

Team :
Journalism & Mass Communication, DSVV & BSGP Shantikunj

Contact Us :
Dr. Deepak Kumar
Journalism & Mass Communication
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya
Mobile- 9258360965
deepak.kumar@dsvv.ac.in
anahat@dsvv.ac.in

DEV SANSKRITI
VISHWAVIDYALAYA
www.dsvv.ac.in

Recognized by UGC,
Accredited by NAAC and
Certified by ISO 9001:2015